श्री महावीराय नमः

श्रीमत् सुदर्शन गुरवे नमः

# जीवन दर्शन–गुरु सुदर्शन

जय जिनशासन प्रकाशन

# महामंत्र नवकार

## नमो अरिहंताणं
## नमो सिद्धाणं
## नमो आयरियाणं
## नमो उवज्झायाणं
## नमो लोए सव्व साहूणं

**एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो**
**मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं**

गुरु सुदर्शन जन्म शताब्दी वर्ष

2022-2023

# जीवन दर्शन—गुरु सुदर्शन

जय जिनशासन प्रकाशन

# जीवन दर्शन-गुरु सुदर्शन

**प्रथम संस्करण :–** जन्म शताब्दी वर्ष 2022
**सर्वाधिकार** © प्रकाशक

**प्रकाशक / प्राप्ति स्थान :–**
रविन्द्र जैन
जय जिनशासन प्रकाशन
212, वीर अपार्टमैन्टस्, सैक्टर 13,
रोहिणी, दिल्ली-110 085
Mob: +91-98102 87446
Email : jaijinshaasanprakaashan@gmail.com

**मुद्रक :–**
सिस्टम्स् विज़न, नई दिल्ली
Mob: +91-98102 12565
Email: systemsvision96@gmail.com

JEEVAN DARSHAN GURU SUDARSHAN

**अर्थ सौजन्य :–**
श्री सुविनीत जैन, पुनीत जैन एवं नवनीत जैन
सुपुत्र
स्व. संतोष जी धर्मपत्नी श्री बिजेन्द्र जैन (कांधला-U.P.)

**इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की किसी भी प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।**

# प्रकाशकीय

4 अप्रैल 2022 से 4 अप्रैल 2023 – पूज्य संघ शास्ता, शासन प्रभावक श्रद्धेय गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. का जन्म शताब्दी वर्ष है। पूज्य गुरुदेव इस युग के विलक्षण अद्‌भुत महापुरुष थे। उन्होंने उत्तर भारत में जैनत्व का शुद्ध स्वरूप स्थापित किया। शिथिलाचार और सांप्रदायिक कट्टरवाद से दूर रह उन्होंने संतुलित संयम का आदर्श प्रस्तुत किया। समग्र उत्तर भारत उनका ऋणी है। उस ऋण को स्वीकार करते हुए हमें जन्म शताब्दी वर्ष को पूर्ण श्रद्धा के साथ मनाना है अतः पूज्य गुरुदेव के जीवन परिचय एवं उपदेश से संबंधित ये लघु पुस्तिका हमारे समक्ष है।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने के पीछे उन स्वाध्यायी बंधुओं की सुविधा को ही दृष्टि में रखा गया है जो गांव-गांव और नगर-नगर जाकर पूज्य गुरुदेव के जीवन से सबको परिचित करवाएंगे एवं उनके उपकारों व उपलब्धियों को स्मृति में लाएंगे।

इस पुस्तिका को भी गणाधीश गुरुदेव श्री प्रकाश चन्द्र जी म. एवं संघाधार गुरुदेव श्री विनय चन्द्र जी म. की छत्रछाया तथा बहुश्रुत गुरुदेव श्री जय मुनि जी म. की सुस्वादिष्ट लेखनी एवं संघ संचालक गुरुदेव श्री नरेश चन्द्र जी म. की कृपादृष्टि मिली है।

अर्थ सौजन्य का लाभ गुरुभक्त श्री बिजेन्द्र जी जैन (कांधला) वालों ने लिया है जो श्री संघ संचालक गुरुदेव की संसारिक बहन का परिवार है। इनके आभारी होने के साथ-2 श्री विक्रम आदित्य जी के भी धन्यवादी हैं जो पुस्तक प्रकाशन में सहयोगी बने हैं।

पूज्य गुरुदेव का महान और प्रभावक जीवन जानने के लिए **'सूर्योदय से सूर्यास्त तक'** पुस्तक को भी अवश्य अपने हाथों में लें एवं पारायण करें।

इन्हीं शुभ मंगल कामनाओं के साथ–

रविन्द्र जैन
(जय जिनशासन प्रकाशन)

# गुरु सुदर्शन आरती

**(तर्ज़– जय जगदीश हरे)**

गुरुदेव सुदर्शन जी, गुरुदेव सुदर्शन जी।
भाव-वन्दना उनकी, है दुख-मोचन जी ॥टेक॥

नाम स्मरण करते ही, मन की कली खिलती (मेरे)
ज्ञान, ध्यान, जप, तप की, प्रेरणा है मिलती ॥1॥

मन की हर चिंता का, समाधान होता (है)
माँ की गोद में बालक, है निर्भय सोता ॥2॥

जन्म स्थान रोहतक था, थे सुन्दरी नन्दन (तुम)
पिता चंदगी के सुत, को शत-शत वन्दन ॥3॥

बाबा जग्गूमल के, पीछे चल-चल कर (हाँ)
पाए मदन लाल जी, पावनतम गुरुवर ॥4॥

जीवन को चमकाया, धर्मोद्योत किया (था)
दुखित-खिन्न जनता को, सच्चा स्नेह दिया ॥5॥

दर्शन, प्रवचन, चिंतन, संयम अनुपम था (हाँ)
करुणा, दया, क्षमा का, पावन संगम था ॥6॥

ली संगरूर में दीक्षा, पाया संयम धन (हाँ)
शालीमार दिल्ली है, पुण्य भूमि पावन ॥7॥

सबके हृदय में बैठे, सबके सहारे हो (तुम)
पावन चरण-शरण से, नाव किनारे हो ॥8॥

अपनी कृपा का हम पर, सदा हाथ रखना (तुम)
दूर न जाने देना, हमें साथ रखना ॥9॥

# गुरु सुदर्शन चालीसा

**दोहाः–**

**महावीर भगवान के शासन के श्रृंगार।**
**संघशास्ता थे गुरु करते पर उपकार ॥**
**गुरु मदन की वाटिका खिला सुदर्शन फूल।**
**पतित पावनी आत्मा मत जाना तुम भूल ॥**
**गुरुवर के तप त्याग का, सब जग करे बखान।**
**उनके शुभ उपदेश से, मिलता सम्यग् ज्ञान ॥**

ध्यान लगा गुरुवर को ध्याऊँ, जो मांगू सो ही फल पाऊँ।
मिले रोशनी मिटे अन्धेरा, जिस पर तुमने तेज बखेरा ॥

तुम चरणों पर शीश झुकाऊँ, तेरा यश मैं सदा ही गाऊँ।
दुःखी जनो का काज संवारा, महा पापियों को भी तारा ॥

गुरुवर तेरा तेज निराला, तुमको ध्यावे किस्मत वाला।
माता सुन्दरी के थे जाये, पिता चन्दगी के लाल कहाये ॥

संगरूर शहर में संयम धारा, बुलंद होता गया सितारा।
गुरु मदन की आँख का तारा, नाथू गुरु ने दिया सहारा ॥

तुम-सा तपी न कोई देखा, जो बदले कर्मों की रेखा।
क्रोध मान को दूर भगाया, माया लोभ निकट नहीं आया ॥

जिसने गुरुवर तुमको जाना, उसने गुरुवर तुमको माना।
जो हृदय से आपको ध्यावे, दुनिया में यश नाम कमावे ॥

जैन धर्म के मोती थे तुम, आत्म ज्ञान की ज्योति थे तुम।
तुम सबके दुःख हरने वाले, खाली झोली भरने वाले ॥

जय-जय कार करे जो तेरा, भव-भव का मिट जाए फेरा।
जिसपर तुमने नजर जमाई, उसकी सोई दुनिया जगाई ॥

जिस घर तुमने चरण टिकाए, खुशियों के अम्बार लगाये।
तेरी महिमा बड़ी निराली, तेरा वचन जाए न खाली ॥

बत्तीस शास्त्रों के थे तुम ज्ञाता, परमत के भी थे व्याख्याता।
तुम थे सब के जानन हारे, भव सागर से तारण हारे ॥

सबको एक नजर से जाना, राव रंक का भेद न माना।
अटल इरादे रखने वाले, मनोभाव को पढ़ने वाले ॥

धर्म ध्यान का पाठ पढ़ाते, सबको सत् का पथ दिखलाते।
गुरुवर के सब शिष्य हैं प्यारे, सत्यशील संयम में न्यारे ॥

अमृतमयी थी तुम्हारी वाणी, कल्याणी गुण गण की खानी।
गुरु चरण में ध्यान लगाओ, मन वाञ्छित फल सब ही पाओ ॥

जो तेरी रहमत को पाएं, ज्ञान ध्यान में बढ़ते जाएं।
गुरुवर मेरे कष्ट निवारो, दया दृष्टि से मुझे निहारो ॥

गुरुवर सब कुछ तेरे अर्पण, जैन धर्म के तुम हो दर्पण।
सकल संघ मिल महिमा गाएं, श्री चरणों में शीश झुकाएं ॥

पूजे गुरुवर ये जग सारा, रहे दमकता तेज तुम्हारा।
तेरी आज्ञा धर्म हमारा, तुझ पर सारा जीवन वारा ॥

पाकर तुम-सा साधक पावन, धन्य हुआ जग का यह आंगन।
सुदर्शन चालीसा कवच निराला, इसको पहने भागों वाला ॥

निशदिन पढ़े सदा मन लाए, करे निर्जरा कर्म खपाए।
श्रद्धा पूर्वक जो भी ध्याता, शान्ति समाधि सम्पत्ति पाता ॥

धन दौलत के भरे भण्डार, बंद चले सब कारोबार।
शालीमार से स्वर्ग सिधारे, देवलोक को हो गए प्यारे ॥

शासन प्रभावक संयम की मूर्ति, कभी न होगी तुम्हारी पूर्ति।
जो गुरुवर का पढ़े चालीसा, बनता जीवन बिस्वाबीसा ॥

**दोहा–**

**जो नर करता भाव से, नित उठ कर यह पाठ।**
**उसके घर बरते सदा, सभी तरह के ठाठ ॥**
**शुध्द भाव से ये पढ़ें, प्रतिदिन जो नर नार।**
**आनन्दमय जीवन बनें, मिले मुक्ति का द्वार ॥**

# गुरु सुदर्शन स्तुति

**तर्जः ओ साहिबा-4...**

सुदर्शन गुरु 4, कर रहे हैं हम आज भी, तेरे दर्शन गुरु ॥टेक॥

1. सन् 1923, अप्रैल चार आई, स्वर्गों से धरती पर अद्‌भुत बहार लाई,
   सुन्दरी मां की कुक्षि, में हुए अवतरित तुम,
   ईश्वर थे कहलाए, अर्चित व पूजित तुम,
   लौह भी था, कुंदन बना, पा के स्पर्शन गुरु ॥
2. रोहतक शहर ही वो, उदयांचल है पावन,
   तुम सूर्य बन करके, जहां उदित हुए भगवन्,
   श्री चन्दगीराम पिता, की आंखों के चन्दा,
   वर्धापन सब देते, कहते जय-2 नन्दा,
   मोद सबको, देते रहे, आप नंदन गुरु ॥
3. यह जन्म शताब्दी वर्ष, अपने सम्मुख आया,
   है मधुर-2 यादों, से तन मन हर्षाया,
   सन् 2022, अप्रैल चार मंगल,
   इस वर्ष का पहला दिन, उत्सव होगा हर पल,
   भक्त तेरा, जन-2 बना, तुम जनार्दन गुरु ॥
4. बाबा जाग्गूमल जी, के पौत्र लाडले तुम,
   व मदन गुरु जी के, चेले अलबेले तुम,
   श्री तपोधनी जी के, जीवन साथी गुरुवर,
   संघनायक पद्‌म मुनि, के अग्रज रहवर,
   संघ चारों, श्री चरणों में, करते अर्पण गुरु ॥

# गुरु सुदर्शन स्तुति

**तर्जः आया-2 ये त्यौहार आया...**

आओ गुरुवर सुदर्शन को ध्यायें, उनकी जन्म शताब्दी मनाएं,
जय-2 बोलो जय-2 बोलो, जय जय बोलो, जय, आओ गुरुवर..॥टेक॥

1. गुरु सुदर्शन के भक्तों, सुन लो आह्वान हमारा,
जन्म शताब्दी वर्ष है आया, गूंजे घर-घर नारा,
अपने गुरुवर की जय जय बुलाएं, उनकी जन्म शताब्दी मनाएं ॥

2. आज अगर वे होते तो हम, कितना हर्ष मनाते,
कितनी खुशियां कितने उत्सव, पूरे वर्ष मनाते,
वो ही उत्साह अब भी दिखाएं, उनकी जन्म शताब्दी मनाएं।

3. 2022 सन् की, अप्रैल चार है पावन,
गुरु सुदर्शन जन्म जयन्ती, पर्व बड़ा मनभावन,
वर्ष भर गुण गुरु जी के गाएं, उनकी जन्म शताब्दी मनाएं ॥

4. गाने हैं गुण अपने, जीवन में भी अपनाने हैं,
गुरु सुदर्शन जी सबके ही, जाने पहचाने हैं,
श्रद्धा का अर्घ्य उनको चढ़ाएं, उनकी जन्म शतब्दी मनाएं ॥

5. सपरिवार करें समायिक, ये गुरुवर का पूजन,
नतमस्तक हो नित्यप्रति, करना भावों से वन्दन,
प्रातः व सायं का क्रम बनाएं, उनकी जन्म शताब्दी मनाएं ॥

6. हो अखण्ड नवकार जाप तो, ध्यान गुरु का होगा,
दिल की गहराई से तब, सम्मान गुरु का होगा,
स्थानकों में व घर में बिठाएं, उनकी जन्म शताब्दी मनाएं ॥

7. एकाशन अयम्बिल की हों, जगमग जगमग लड़ियां,
दूर अंधेरा होगा कर्मों की, टूटेंगी कड़ियां,
तन व मन दोनों को ही तपाएं, उनकी जन्म शताब्दी मानाएं ॥

8. वर्षीतप व बड़ी तपस्या, करने की हो शक्ति,
करके उनको अर्पण कर दें, ये है गुरु अनुरक्ति,
गुरु चरणों में सुरति लगाएं, उनकी जन्म शताब्दी मनाएं ॥

9. बारहव्रती श्रावक बनने, का है लक्ष्य बनाना,
प्रतिक्रमण हो याद स्वयं, करना सबको करवाना,
चार स्कंधों को लेकर निभाएं, उनकी जन्म शताब्दी मनाएं ॥

10. दान शील तप भाव मोक्ष के, चार द्वार माने हैं,
गुरु स्मृति में यथाशक्ति, चारों ही अपनाने हैं,
धर्म पथ पर ये जीवन चलाएं, उनकी जन्म शताब्दी मनाएं ॥

# जीवन–उपदेश

## मंगलाचरण

**पावन दर्शन नाम सुदर्शन कितना प्यारा-प्यारा है,**
**भव सागर में डूब रहे जो उनके लिए किनारा है।**
**कष्ट नष्ट हो जाते ऐसा पावन नाम तुम्हारा है,**
**शरणा गुरुवर मिला आपका ये सौभाग्य हमारा है ॥**
**नाम आपका लेकर ही सब कार्य शुरू हम करते हैं,**
**हाथ जोड़कर भक्तिभाव से शीश चरण में धरते हैं ॥**

श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वन्दन करते हुए, पूज्य गुरुदेवों को भी वन्दना करता हूँ। आप सभी भाई-बहनों को सादर-जय जिनेन्द्र।

एक विशेष उद्देश्य लेकर आपके क्षेत्र में आना हुआ है। संघशास्ता, शासन प्रभावक, पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के जन्म शताब्दी वर्ष की शुरुआती पावन घड़ियां हैं। पूज्य गुरुदेव जी म. के जन्म को 99 वर्ष, दीक्षा को 80 वर्ष तथा स्वर्गवास को 23 वर्ष हो रहे हैं, जीवन के 76 वर्षों में उन्होंने जो किया, जो दिया, वह कालातीत था। सदियां बीत जाएंगी, सहस्राब्दियां गुजर जाएंगी पर उनकी जीवन शैली, उपकार, कृपाएं और उपदेश अप्रासंगिक नहीं होंगे, हर युग को उनसे प्रकाश मिलता रहेगा। वे Time Less महापुरुष थे। आज हमें उनके उपदेशों, संदेशों को समझना भी है और अपनाना भी है।

My life is my message वाला वाक्य उन पर शत-प्रतिशत सही घटित होता है। सन् 1945 से सन् 1999 तक 54 वर्ष पूज्य गुरुदेव जी म. अपने उद्‌बोधक प्रवचनों से जन-2 को धर्म का संदेश देते रहे फिर भी प्रवचनों के संबंध में उनकी स्पष्ट विचार धारा थी कि ये प्रवचन मैं अपने को सुनाता हूँ। वे प्रचार से ज्यादा आचार को महत्त्व देते थे। वे अपनी वाणी से ही नहीं, जीवन से बोलते थे।

**नहीं बोलते शब्द हो जिनके किन्तु बोलते कार्य हों,**
**ऐसे संत पुरुष इस जग में कहाँ नहीं सत्कार्य हों।**

आज मैं उनके मुख्य संदेशों की झलक आपके सामने रखूंगा और भावना है कि उनके संदेश हमारे कानों में ही नहीं, जीवन में भी उतरेगें। गुरुदेव जी म. अक्सर फरमाते थे कि जीवन की तीन दशाएं होती हैं 1) बचपन 2) जवानी 3) बुढ़ापा।

वे कहते थे कि बचपन का मेवा विनय है, जवानी का मेवा विवेक है और बुढ़ापे का मेवा शांति है। विनय-विवेक-शांति इस त्रिवेणी से मानव-जीवन सार्थक, सुखी और सफल बनता है।

पूज्य गुरुदेव जी म. का स्वयं का जीवन इन तीन गुणों का जीवन्त उदाहरण था, वे केवल बचपन में ही विनयवान् नहीं रहे बल्कि उनकी विनय यौवन और वार्धक्य दोनों उम्रों को भी सजाती रही। इसी तरह उनमें विवेक की बुद्धि यौवन में तो बनी ही रही, बचपन, वार्धक्य में भी बरकरार रही। इसी तरह उनकी शांति केवल बुढ़ापे का ही शृंगार नहीं बनी, बचपन और यौवन में भी उनका शांति-गुण अत्यन्त गहरा था। उन्होंने अपने ही गुणों को समाज के सामने प्रस्तुत करते हुए तीनों उम्रों के साथ उनको Classified (वर्गीकृत) कर दिया, ताकि एक व्यक्ति एक समय में एक गुण को अधिक से अधिक Cultivate (विकसित) करने में अपनी Energy (शक्ति) होम सके।

आइये, बचपन और विनय के साहचर्य को समझ लें। बचपन ही सारे जीवन की नींव है, बुनियाद है। इसी तरह समस्त गुणों में भी विनय ही बुनियादी गुण है। दोनों का तालमेल आवश्यक है। **'एवं धम्मस्स मूलं विणओ'** धर्म का मूल-भूत गुण विनय है। विनय गुण अन्य सब गुणों को जीवात्मा में प्रवेश दिला देता है।

**हों सब गुण अगर विनय गुण प्राप्त अकेला हो।**
**हो मुक्ति, ये दाँव किसी पुण्यवान् ने खेला हो ॥**

विनय से आत्मा में पात्रता विकसित होती है और पात्रता आने पर

सृष्टि का समस्त वैभव स्वयं ही खिंचा चला आता है। जैन धर्म के 32 आगमों में 4 मूलसूत्रों का भी एक वर्ग है उन मूल सूत्रों में दशवैकालिक और उत्तराध्ययन दो सूत्र प्रमुख स्थान रखते हैं। उनकी मूलभूत शिक्षाओं में विनय का बार-2 उल्लेख हुआ है। दशवैकालिक के नौवें अध्ययन में बताया है कि जीवन में चार तरह से समाधि-शांति की प्राप्ति होती है। उन चार उपायों में पहला उपाय 'विनय' है, दूसरा उपाय 'श्रुतज्ञान' है, तीसरा उपाय 'तपस्या' और चौथा उपाय 'आचरण' है। उस जगह चारों उपायों का संयुक्त नाम भी विनय समाधि ही है तथा पहली समाधि भी विनय समाधि है। विनय से उन समस्याओं का समाधान निकल जाता है जो समस्याएं अहंकार के कारण पैदा होती हैं। आज के युग में छोटी उम्र से ही Ego बढ़ने लगा है इसके बढ़ने से क्रोध भी बढ़ रहा है। क्रोध के बढ़ने से आपसी सम्बन्ध खराब हो रहे हैं। टैंशन का माहौल बन रहा है। इसलिए आगमकारों ने हमें सबसे पहले विनय को विकसित करने की हिदायत दी। पूज्य गुरुदेव शुरू से ही विनय की साक्षात् प्रतिमा रहे हैं। उनके जीवन के कण-2 में विनय समाई हुई थी। अपने निकट आने वाले श्रावकों में भी वे विनय गुण भरते थे। अपने शिष्यों को भी विनय से भरपूर करते रहे।

**विनय है धर्म का कारण, जो इसको धार लेते हैं।**
**वे इस जीवन की नैय्या को, लगा उस पार लेते हैं॥**

पूज्य गुरुदेव फरमाते थे, प्रत्येक बालक को सुबह उठते ही नवकार मंत्र का जाप करना चाहिए क्योंकि इस मंत्र में पांच परमेष्ठी भगवन्तों को नमन किया है। नमन करना विनय का प्रतीक है। नवकार मंत्र के बाद तिक्खुतो के पाठ से गुरु वन्दना करना भी आवश्यक है। यदि अपने गांव या शहर में गुरु भगवंत हों तो उनके पास जाकर वन्दना करें, यदि उपस्थित नहीं हो तो उनकी छवि मन में बसा कर भाव पूर्वक वन्दना करने से उच्च गोत्र का बंध होता है, नीच गोत्र का क्षय होता है। विनयमूलक हर कार्य पूरा होता है।

गुरु वन्दना के बाद अपने घर के प्रत्येक बुजुर्ग को अर्थात् माता-पिता,

चाचा-ताऊ, दादा-दादी के चरण स्पर्श करने चाहिए। उनके चरण स्पर्श करने से भरपूर आशीर्वाद मिलते हैं। गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. की एक घटना आपको बताना चाहूंगा। सन् 1945 में व्याख्यान वाचस्पति गुरुदेव श्री मदन लाल जी म. ने उन्हें कहा 'सुदर्शन, तू अपने प्रवचनों में एक घण्टे में इतनी सामग्री सुना देता है, जितनी मैं तीन घण्टे में सुनाता हूँ। चार महीने में इतनी सामग्री कहां से लाएगा। उन्होंने अपने गुरुदेवों के दोनों चरण पकड़कर कहा— गुरुदेव जी! मुझे तो इन चरणों से सब कुछ मिला है, और आगे भी मिलेगा। अपने शिष्य की विनय भरी भाषा सुनकर पूज्यपाद व्याख्यान वाचस्पति गुरुदेव श्री मदन लाल जी म. भावविभोर हो गए। बोले— तेरा भण्डार सदा भरा रहेगा। तूने मेरे चरणों की पादुकाएं अपने मस्तक पर रखी हैं ये तेरे लिए छत्र का काम करेंगी।

विनयवान् व्यक्ति कभी अहम् की भाषा नहीं बोलता, अहम् का व्यवहार नहीं करता। वह अनुशासन में ढलता जाता है गुरु कठोर कहें या कोमल, कभी नाराज नहीं होता। वह मानकर चलता है कि गुरु मेरे हितैषी हैं, मेरे निर्माण के लिए ही मुझे डांटते हैं।

**क्रोध करके भी तो गुरुजन गुण ही देते हैं,**
**क्रुद्ध हो हमसे बुराई छीन लेते हैं ॥**

विनयवान् शिष्य, भक्त, या पुत्र-पुत्री का ये ख्याल होता है कि यदि हम परिपूर्ण होते तो हमें गुरु के मार्गदर्शन की जरूरत ही क्या थी? यदि हम अधूरे हैं तो हमारे गुरुभगवंत ही हमारे अधूरेपन को दूर करेंगे। इसलिए उनकी डांट डपट हमारे जीवन को तराश देगी, मांज देगी।

**अनुशासन का दण्ड झेलकर, शिष्य चमकता हीरे-सा,**
**मीठा बन जाता है जीवन, घिस जाने पर खीरे-सा ॥**

लेकिन आज के युग में ये समस्या विशेष रूप से उभरती जा रही कि हमें अनुशासन की बातें सुहाती ही नहीं। **'अणुसासिओ न कुप्पिज्जा'** यदि हमारे गुरुजन हमें हमारी भूलों को सुधारने के लिए अनुशासनात्मक कारवाई करते हैं तो हमें कुपित नहीं होना चाहिए। बल्कि खुश होना

चाहिए। ये सोचो कि कोई हमारे सिर पर तो है, जो हमारी चिंता करता है, हमें संभालता है। वे भाग्यहीन होते हैं, जिन्हें कोई संभालने वाला नहीं मिलता। पूज्य गुरुदेव जी म. महाभारत का प्रसंग सुनाते थे।

18 दिन के महायुद्ध के बाद जब कौरवों का सर्वनाश हो गया, और पाण्डव विजयी हो गए। उस मंगलमय अवसर पर श्री कृष्ण जी ने अर्जुन के रथ को एक तरफ किया, और कहने लगे, सखे! प्रतिदिन मैं रथ से पहले उतरता था, और तुम बाद में। पर आज पहले तुम उतरो, मैं बाद में उतरूगां। अर्जुन ने बिना तर्क वितर्क किए श्री कृष्ण जी की आज्ञा का पालन किया। और रथ से उतर कर एक ओर खड़े हो गए। फिर श्री कृष्ण जी उतरे और उनके उतरते ही रथ अपने आप आग की लपटों में घिर गया और चंद मिनटों में राख हो गया। अर्जुन की जिज्ञासा को शांत करते हुए श्री कृष्ण जी कहने लगे, तुम्हारे रथ में भीष्म, द्रोण, अश्वत्थामा, जयद्रथ जैसे अप्रतिम योद्धाओं के तीर लगे हुए थे, वे भयंकर रूप से घातक थे। वे मेरे कारण प्रभाव नहीं दिखा पा रहे थे, पर आज उनको अपना प्रभाव दिखाना ही था, यदि मैं तुमसे पहले रथ से उतर जाता तो उन तीरों की भीषण अग्नि तुझे राख बना देती, मैं जब तक रथ में बैठा रहा तब तक उन बाणों से कोई बाण प्रभाव नहीं दिखा सका। बड़ों की कृपा से हर संकट टल जाता है, यह सिद्धान्त हर धार्मिक व्यक्ति को समझ लेना चाहिए।

पूज्य गुरुदेव जी म. ने जीवन निर्माण का दूसरा उपाय विवेक को बताया है। युवावस्था में विवेक की विशेष आवश्यकता है। यह उम्र जोश से भरी होती है, उस जोश को होश में तब्दील करने वाली विद्या ही विवेक है। उचित-अनुचित, सही-गलत, अच्छे-बुरे की सही पहचान ही विवेक है। संतुलित बुद्धि वाला मानव ही विवेक का अधिकारी होता है। मगर मुश्किल तो यही है कि हमारी बुद्धि जल्दी ही फिसल जाती है। धन की मात्रा जरा सी ज्यादा हो गई तो विवेक लुप्त हो जाता है, प्रशंसा के स्वर कानों में पड़ते ही विवेक विदा हो जाता है। प्रशंसा ही क्यों? निंदा के शब्द तो उससे भी ज्यादा विवेक को नष्ट कर देते हैं। उत्तराध्ययन

सूत्र के चौथे अध्ययन में लिखा है, **'खिप्पं न सक्केइ विवेकमेउं'** जीवन में विवेक की प्राप्ति बहुत देर से होती है। जब आदमी का जीवनदीप बुझने के करीब होता है तब उसे ध्यान आता है कि तूने क्या करना था और क्या कर बैठा, लेकिन उस समय का विवेक, विवेक न बनकर पश्चात्ताप मात्र रह जाता है। जैसे एक गाड़ीवान उल्टे रास्ते पर गाड़ी को चढ़ाकर ले गया। कुछ दूर जाते ही गाड़ी का धुरा टूट गया और गाड़ीवान के लिए पश्चात्ताप के अलावा कुछ भी शेष नहीं रहा। ऐसे ही कुछ लोग जीवन को गलत रास्ते पर चला देते हैं और जीवन की आखरी घड़ियों में रोते और पछताते हैं।

पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के पास एक विशाल परिवार के मुखिया आते थे। उस परिवार का उद्योग के क्षेत्र में ऊँचा नाम था। एक-2 Factory में 500-600 Workers काम करते थे। बेहिसाब आमदनी थी। एक दिन पूज्य गुरुदेव जी म. ने घर के मुखिया से कहा— सेठ जी! मुझे लग रहा है कि आपके परिवार में असंतोष की शुरुआत हो रही है। नई पीढ़ी में आपसी प्रेम कम होता जा रहा है। आप घर के बड़े हो, अभी इस चिंगारी को शांत कर दो। आप दुनिया के झगड़ों को निपटाते हो। अब अपने घर के झगड़ों को निपटा दो, यदि ये चिंगारी शांत नहीं हुई तो ज्वालामुखी बन सकती है। सारी Factories को ताले लग सकते हैं। समय से पहले संभलने में ही अक्लमंदी है। उस सेठ ने गुरुदेव जी म. की बात को गौर से सुना। घर जाकर सबकी Meeting की। पूज्य गुरुदेव जी म. का ईशारा समझाया। लेकिन एकाध सदस्य इतना हठी निकला उसने समाधान निकलने ही नहीं दिया, और नौबत ये आई कि कुछ ही सालों में घर के झगड़े Court में चले गए। एक ने दूसरे के खिलाफ और दूसरे ने पहले के खिलाफ Stay ले लिया। यों करते-2 सबके Accounts Freeze हो गए और फैक्ट्रियों पर ताले लग गए। जिन परिवारों की Factories में कई-2 हजार लोग नौकरी करते थे, उन्हीं के बच्चे अपने गुजारे के लिए दूसरों की Factories में नौकरी करने को मजबूर हो गए।

**आच्छे दिन पाछे गए, गुरु से किया न हेत।**
**अब पछताए क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत ॥**

**जिन्दगी भटक न जाए, यों खबरदार रहो।**
**आंच इज्जत पे न आए, यों खबरदार रहो ॥**

आज जवानों के सामने कई तरह की चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों का मुकाबला वही युवक कर सकते हैं जिनके पास विवेक की लगाम है। संस्कृत भाषा का एक प्यारा-सा श्लोक है–

**यौवनं धन संपत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता,**
**एकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् ॥**

जवानी, धन, अधिकार और अविवेक इन चारों में से कोई एक भी अनर्थ खड़ा कर सकता है और जहाँ चारों इकट्ठे हो जाए, उसका हाल क्या होगा, उसकी क्या कोई कल्पना कर सकता है?

इसको एक उदाहरण से आसानी से समझ लें– बन्दर स्वभाव से ही चंचल होता है और By Chance वह शराब पी ले तो उसकी चंचलता, भागदौड़ और तीव्र हो जाएगी यदि उस शराब-पीए बन्दर को बिच्छू काटे तो उसकी क्या हालत होगी और उस पर फिर भूत चढ़ जाए तो चंचलता का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। आप समझ गए होंगे कि गुरुदेव जी म. ने यौवन-धन-सत्ता और अविवेक को कितना खतरनाक माना है। पूज्य गुरुदेव जी म. ने सैकड़ों युवकों को विवेक की मशाल थमाकर उनके पथ को आलोकित किया था। उन्होंने युवकों को समझाया कि अभी तुम जवानी की देहलीज पर चढ़े हो तुम्हें अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक सरोकारों को संभालना है। व्यक्तिगत स्तर पर अपना मानसिक संतुलन कायम रखना होगा। अत्यधिक क्रोध से बचोगे तो तुम्हारा आध्यात्मिक जीवन उन्नत बनेगा। किस बात पर, किसके सामने, कितनी मात्रा में क्रोध करना या नहीं करना, ये विवेक युवकों में आ जाए तो उनका जीवन दुःखमय नहीं बनेगा। इस क्रोध के नियंत्रण के लिए युवकों को अपनी Ego भी Control में लाना होगी।

आज बात-2 में Ego-Clash होता जा रहा है। यही Ego-Clash झगड़ों का कारण बन रहा है। पारिवारिक Level पर आज के युवक-युवतियों को बहुत नाजुक Balance बनाना पड़ेगा। उस Balance का नाम ही विवेक है। उनके सामने उनके माता-पिता, दादा-दादी, सास-ससुर हैं तो अपने बराबर के भाई-बहन, पति-पत्नी, जीवन साथी आदि होते हैं। तीसरी पंक्ति में उनके समक्ष बाल-बच्चे भी हैं। इन सबको प्रसन्न रखना, सबकी अपेक्षाओं पर खरा उतरना, है तो बड़ी टेढ़ी खीर, पर जिसके पास अपनी विवेक दृष्टि होती है या जिसे गुरुओं से मार्गदर्शन मिलता रहता है, वे इन पारिवारिक मोर्चों पर भी कामयाब हो जाते हैं। वे अपने बुजुर्गों का सम्मान कायम रखते हैं, हमसफर लोगों का सहयोग लेते हैं तथा अगली पीढ़ी को स्नेह से भरपूर रखते हैं। जैसे श्री राम ने अपने पिताजी की आज्ञा का पालन किया। अपने भाइयों को सीने से लगाकर रखा तथा आने वाली 'लव-कुश' जैसी संतानो में संस्कार और सद्गुण भरे। भगवान् महावीर की मातृ-पितृ भक्ति तो आपको याद ही है उनको किसी प्रकार का कष्ट न हो इसलिए दीक्षा का आग्रह भी नहीं किया। अपने भाई नंदीवर्धन को सहयोग दिया। पत्नी यशोदा को अपनेपन से सहेजा तथा पुत्री प्रियदर्शना की हर तरह से सार-संभाल की।

स्वयं पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. ने घर में तथा साधना काल में इस संतुलन का उत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत किया। घर में अपने बाबा जी, पिता जी की प्रत्येक आज्ञा का पालन किया। दीक्षा लेकर गुरुदेव व्याख्यान वाचस्पति श्री मदन लाल जी म., योगीराज श्री राम जी लाल म., गणावच्छेदक श्री बनवारी लाल जी म. आदि की गहन सेवा की। अपने गुरु भाई श्री तपस्वी जी म., श्री सेठ जी म., भगवन् श्री जी का सहयोग लिया और दिया तथा अपने शिष्यों को असीम स्नेह और प्यार से लबालब किया। उन्होंने पारिवारिक जीवन की सुख समृद्धि का Model अपने जीवन से ही दे दिया था। वे विवेक की जीती जागती तस्वीर थे। उनसे लाखों युवकों ने विवेक सीखा। हमारा आपसे निवेदन है कि आप भी उनके भक्त हैं अतः उन जैसा विवेक अपने जीवन में ढालने का प्रयास करें।

विवेक का विस्तार परिवार से आगे बढ़कर समाज तक आना चाहिए। आप अपने सामाजिक दायित्व को बखूबी पहचानो। जैन समाज जिन मूल्यों की वजह से अपनी पहचान बनाए हुए है उनका संरक्षण और पालन हम और आप को करना है। जैसे आप सब जानते हैं कि जैन समाज में खान-पान, चाल-चलन के ऊँचे Standards (आदर्श) रहे हैं। इस समाज के बारे में विश्व जानता है कि जैन लोग मांस, अंडा और शराब का सेवन नहीं करते। Jain Food को विश्व भर में मान्यता मिली है इसके पीछे हम लोगों की आहार की शुद्धि बहुत बड़ा कारण रही है। अपनी इस अलग पहचान को सुरक्षित करने के लिए हमें निजी तथा संगठित तौर पर अभियान चलाना होगा। हमारे खान-पान में एक बुराई चुपचाप और बड़ी तेजी से सेंध लगा रही है, वह है शराब का प्रचलन। यद्यपि इसने Society (समाज) के कुछ तबके को तो अपनी गिरफ्त में ले लिया है पर फिर भी बहुत बड़ा हिस्सा इसकी मार से बचा हुआ भी है। पर इस जाल में फंसे युवकों की हमें गहरी चिंता है। ये बात तब अधिक Clear होती है जब किसी लड़की वाले पिता को अपनी पुत्री के लिए Non-Alchoholic (मद्य न पीने वाला) वर ढूंढना होता है। लड़के के माता-पिता कहते हैं कि हमारा बेटा शराब को छूता भी नहीं, जबकि Facebook पर उसकी Profile के Photo कुछ और ही कहानी कह रहे होते हैं। माता-पिता झूठ नहीं बोलते क्योंकि उन्हें अपने बेटे का एक चेहरा ही मालूम है तथा Facebook भी झूठ नहीं बोल रहा क्योंकि वहां Upload की गई फोटो Real है। हम आपसे इतना ही निवेदन करना चाहेंगे कि आप जिस धर्म को, भगवान् को, गुरुओं को मानते हो, जिस खानदान से Belong करते हो, कम से कम किसी की शर्म लिहाज मानते हुए शराब की बुराई को अपने जीवन में मत आने दो। यदि आई हुई है तो उसे दृढ़ संकल्प से बाहर फैंक दो।

जैन समाज के कुछ सांस्कृतिक पहलू रहे हैं। उनमें से एक है रात्रि भोजन का त्याग। आप एक वर्ष के लिए रात्रि भोजन का त्याग कर सको तो बहुत अच्छा होगा, यदि पूरी तरह नहीं छोड़ सकते तो चलो कम से

कम रात की शादियों को तो छोड़ ही दो। दक्षिण भारत में 90 प्रतिशत शादियां दिन में होती हैं, सिक्खों में रात की शादी पर पाबन्दी है। सैकड़ों कौमें रात की शादी नहीं करती पर चिंता की बात ये है कि अपनी जैन समाज इस Trend से बहुत दूर है। हमारा पहला अधिकार, पहला कर्तव्य है कि रात के विवाह न हों, इसलिए आप इस दिशा में कुछ ठोस निर्णय लें। एक साल के लिए रात की शादी Attend नहीं करनी, करनी भी पड़े तो वहां खाना नहीं खाना। देखना, आपको कितना फायदा होगा।

जैन समाज का प्राचीन इतिहास ये भी रहा है कि इन्होंने कभी भी झूठ और बेइमानी का सहारा लेकर पैसा नहीं कमाया बल्कि अपनी मेहनत और व्यसन-मुक्त जीवन शैली से इन्होंने समृद्धि के शिखर छुए थे। आज हम सबका फर्ज बनता है कि हम अपने कारोबारों में से झूठ और बेइमानी को निकाल फैंकें। कहीं-2 जैन समाज में ऐसे केस भी आ रहे हैं कि पैसे लेकर देने में आनाकानी कर देते हैं। इससे हमारी प्रतिष्ठा पर दाग लगता है। इन हरकतों से जरूर बाज़ आएं। कम से कम इतना तो जरूर करें कि न देने की नीयत से पैसा न लें तथा अपनी हैसियत हो तो देने से न मुकरें।

**संभालो अपना वो इतिहास, जो थी महानतम संस्कृति और सर्वाङ्गीण विकास।**
**रहे सभ्यता के प्रभात में, हम आगे हर एक बात में,**
**जीवन की हर गति में, रखा सफल चरण विन्यास॥**

विवेक का दायरा व्यक्ति-परिवार-समाज से आगे बढ़ते हुए राष्ट्रीय उत्थान के प्रति भी हमें सावधान करता है। प्रारम्भ से ही जैन धर्म की धारा राष्ट्र कल्याण में बहती रही है। किसी भी जैनाचार्य ने भारत-भूमि के विरुद्ध कदम नहीं उठाया। उग्रवाद-आतंकवाद के घिनौने पथ पर जैन युवक अग्रसर नहीं हुए। राष्ट्र के प्रति हम कर्तव्य परायण बने रहे, इसलिए स्थानांग सूत्र में राष्ट्र धर्म नाम का एक धर्म स्वीकार किया है। भामाशाह जैसे जैन श्रावक ने मेवाड की रक्षा के लिए धन तो दिया ही, साथ ही हल्दीघाटी में राणा प्रताप के साथ युद्ध की कमान भी संभाली। उनका भाई ताराचंद कावडिया भी एक प्रखर योद्धा था। भारतीय स्वतंत्रता

संग्राम में सैकड़ों जैन युवकों ने अपना जीवन बलिदान किया था। पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. विशुद्ध राष्ट्रवादी महापुरुष थे। यद्यपि वे अपने पास राजनीतिक लोगों को तो नहीं बुलाते थे पर राष्ट्र के प्रति पूर्ण जागरूक रहते थे। जब वे स्कूल की पढ़ाई कर रहे थे तब बिहार प्रान्त में भीषण भूकंप आया था और उससे विशेष जनहानि हुई थी। भूकंप पीड़ित लोगों को राहत दिलाने के लिए जगह-2 चंदा इकट्ठा किया जा रहा था। उस समय पूज्य गुरुदेव ने राष्ट्र की भलाई के लिए अपनी अर्जित कमाई वाला गुल्लक तोड़ कर सारा धन भूकंप राहत सहायता कोष में अर्पित कर दिया था। उनकी राष्ट्रीय भावना में जातिवाद की गंध नहीं थी। हिन्दू हो या मुस्लिम, सिक्ख हो या जैन वे सब का हित चाहते थे। सबका हित करते थे।

देश की स्वतंत्रता वाले साल 1947 में उनका चातुर्मास गणावच्छेदक श्री बनवारी लाल जी म. की सेवा में मूनक में था। स्वतंत्रता के सुखद क्षणों में देश-विभाजन का भयावह दौर भी आ गया। पंजाब और बंगाल हिन्दू मुस्लिम दंगों के कारण झुलस गए। सब जगह दरिंदगी का नंगा नाच हो रहा था। उस समय लोग घरों में दुबके रहने में ही अपनी भलाई समझ रहे थे। उन्हें लगता था कि घरों से बाहर बाजार आदि में जाएंगे तो झगड़े हो सकते हैं। पूज्य गुरुदेव जी म. ने श्री बनवारी लाल जी म. से पूछा, 'गुरुवर्य, क्या ऐसे हालात में प्रवचन बन्द नहीं कर देने चाहिए? श्री बनवारी लाल जी म. बोले, 'सुदर्शन मुनि, प्रवचन तो चालू रखो। जो भाई बहन आएंगे उन्हें धर्म का सहारा मिलेगा'। बड़ों का आदेश पाकर पूज्य गुरुदेव जी म. ने अपने प्रवचनों में देश की मौजूदा स्थिति को संभालने की प्रेरणा दी। उन्होंने भाईचारे का संदेश दिया, आपसी प्रेम का महत्त्व समझाया। जैन समाज के साथ-2 Local सिक्ख और हिन्दुओं को भी लगा कि हमें मुसलमानों को Target करके मारना नहीं चाहिए। पूज्य गुरुदेव ने जैन समाज के प्रमुख युवक श्री विलायती राम जी को तैयार किया। वे R.S.S. के प्रमुख कार्यकर्ता थे। उन्होंने अपने साथियों से बात की। उन्हें सारे देश में हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों के कारण

तीव्र क्षोभ था। उसके अलावा एक स्थानीय मुद्दा भी था। पिछले साल कुछ मुस्लिम लड़कों ने हिन्दुओं के घरों में चोरी की थी और न चोरी का सामान मिला और न चोरों को सजा मिली। अब बदला लेने का मौका था। गुरु म. को पता चला तो उन्होनें मुस्लिम बुजुर्गों को समझाया। उन्होंने अपनी कौम के उन लड़कों को बुलाकर सारी स्थिति स्पष्ट की। सबने चोरी का सामान हिन्दुओं को लौटा दिया और अपनी गलती के लिए माफी मांग ली। इस तरह गुरुदेव जी म. ने राष्ट्रीय शांति का माहौल बनाया। उस शांति के बावजूद मुसलमानों का डर बरकरार रहा। मूनक के ईर्द गिर्द कुछ गांव के सिक्खों ने अपने गावों से मुसलमानों को खदेड़ना शुरू कर दिया। उसका असर मूनक के मुसलमानों पर भी आया। उन्होनें भी पाकिस्तान जाने का फैसला कर लिया। पूज्य गुरुदेव जी म. का संकेत पाकर श्री विलायती राम जी ने Local मुसलमानों को सुरक्षित ढंग से Military के हवाले कर दिया और वे आराम से पाकिस्तान पहुंच गए। पूज्य गुरुदेव जी म. का राष्ट्रीय चिन्तन संकीर्णताओं का शिकार नहीं था। वे हर कौम का हित चाहते थे। उनमें राष्ट्र भक्ति का ज्वार कितना तीव्र था, इस बात का अन्दाजा लगाना हो तो उनके उन प्रवचनों को पढ़ना होगा, जो उन्होंने 1962 में चीन हमले के दौरान दिए थे, उस समय गुरुदेव की ललकार सुनने लायक होती थी। सन् 1965 में पाकिस्तानी आक्रमण के समय भी गुरुदेव जी म. में देशभक्ति का जज़्बा गज़ब का उभरा था। 1971 में जब बांग्लादेश का निर्माण हुआ उस समय गुरुदेव जी म. फरमाते थे कि पाकिस्तानी शासकों को सद्बुद्धि मिले। हमारा धर्म तथा हमारे गुरु भगवन्त जब देश की रक्षा के लिए कटिबद्ध रहे हैं तो हमें इस भारत देश की गरिमा के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए। देश को समृद्ध, संपन्न और स्वच्छ बनाने में हमारा विशेष योगदान होना चाहिए। हमारा प्रयास ये रहे कि केवल भारतीय वस्तुओं का ही अधिक प्रयोग करें। विदेशी वस्तुओं के प्रयोग से बचें। गन्दगी फैलाने से बचें, जिससे विश्व में धारणा बने कि भारतवासी स्वच्छता पसन्द लोग हैं। कोई समय था जब फाहियान और ह्वेनसांग सरीखे चीनी यात्रियों ने भारत की महिमा

में ग्रंथ के ग्रंथ लिख दिए। उस वक्त भारत के घरों में ताले भी नहीं लगते थे, क्योंकि कोई किसी की वस्तु चुराता ही नहीं था। यह देश विद्या और अध्ययन का केन्द्र था। विदेशी छात्र भारत में पढ़ने आते थे। तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालय केवल भारत में ही थे। भारत सोने की चिड़िया कहलाता था। यहाँ का चारित्र बल संसार के प्रत्येक नागरिक के लिए आदर्श रूप होता था।

**अस्मद् देश प्रसूतस्य सकासादग्र जन्मनः**
**स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिण्यां सर्वमानवाः ॥**

अर्थात् इस देश में पैदा होने वाले प्रत्येक नर नारी से पृथ्वी के सब इंसान चारित्र का सबक सीख सकते हैं।

मैं अपने जैन युवकों से भी यही कहना चाहूंगा कि हममें देश भक्ति का भाव सदा जागृत रहे।

अब आगे बढ़िए देश के बाद विश्व का नम्बर आता है। हर युग में विश्व के सामने अलग-2 प्रश्न खड़े होते रहे हैं। आज सबसे बड़ा प्रश्न Global Warming है। ये बढ़ती हुई Warming जबरदस्त Warning है। इस Global Warming के चलते मानव जाति का भविष्य खतरे में पड़ा हुआ है। इसके दुष्परिणामों को रोकना है तो पहले इसके कारणों को दूर करना होगा। Global Warming का मुख्य कारण Green House Gases है। जिनके जन्म का कारण तेजी से बढ़ता हुआ Industrialisation (उद्योगीकरण) भी है, पेट्रोल डीजल का अंधाधुन प्रयोग भी है तथा मांसाहार का अधिक प्रचलन भी है। इन मुद्दों पर जैन समाज को कुछ Credits तो स्वतः मिल रहे हैं, कुछ को हमें अर्जित करना होगा। जैसे कि जैनों में न मांसाहार है, न मांस की Industry चलाते हैं इसलिए इस पहलू से जैनों ने Global Warming में कभी भी वृद्धि नहीं की। जिन मुल्कों में Meat अधिक खाया जाता है, Meat के लिए पशुओं को पहले पाला फिर वध किया जाता है, उन्हें जैनों से कुछ शिक्षाएं लेनी चाहिए।

जहाँ तक विशाल उद्योगों का प्रश्न है, जैन धर्म में उन उद्योगों को

निषेध की कोटि में रखा गया है। जिन उद्योगों से पर्यावरण की तीव्र हानि होती हो, पशुओं पर जुल्म होता हो तथा मानवता का शोषण होता हो उन उद्योगों और व्यवसायों को जैन शास्त्रकारों ने कर्मादान नाम दिया है। वनों की कटाई एक कर्मादान है। जैन श्रावक इस तरह के व्यवसायों से दूर रहते आए हैं। जैनों को जंगल न काटने का श्रेय तो जाता ही है, अब उन्हें दूसरा श्रेय लेना चाहिए कि जैन विशाल पैमाने पर वृक्ष लगाते हैं उन्हें पनपाते हैं तथा उनकी देखभाल भी करते हैं। Global Warming का तीसरा कारण ऊर्जा प्राप्ति के लिए पैट्रोल डीजल का अधिक प्रयोग माना है। जैन समाज को पहल करनी चाहिए कि अब Solar Energy की तरफ बढ़ें तथा E. Vehicles को बढ़ावा दें। विवेकवान् व्यक्ति वही होता है जो उपयोगी वस्तु अपनाता है, हानिकारक वस्तु को छोड़ देता है।

पूज्य गुरुदेव सुदर्शन लाल जी म. अक्सर फरमाया करते थे कि विवेकवान् व्यक्ति हंस की तरह व चींटी की तरह होता है। हंस दूध और पानी को अलग कर देता है फिर दूध पी लेता है, पानी को छोड़ देता है। रेत के ढेर में चीनी के कण पड़े हों तो चींटी चीनी के दानों को चुग लेती है और रेत के दानों को वहीं छोड़ देती है। पूज्य गुरुदेव जी म. एक बात और कहते थे जैसे एक सुघड़ नारी अनाज या दालों को साफ करते समय कंकरों को निकाल कर एक तरफ रख देती है और खाने लायक अनाज या दाल को रख लेती है, ऐसे ही विवेकी व्यक्ति सार-2 को अपने पास रख लेता है असार को छोड़ देता है।

**साधु ऐसा चाहिए, जैसे छाज सुहाय।**
**सार-सार को गही ले, थोथा देय उड़ाय ॥**

एक बार गांधी जी रेलवे में सफर कर रहे थे, उनके पास ही एक आदमी और सफर में था। वह उनका कट्टर आलोचक था। उसने अपने पास बैठे गांधी जी को देखा तो अन्दर ही अन्दर कुढ़ गया। उसने गांधी जी के खिलाफ 5-6 कागज लिखकर All-Pin से जोड़कर गांधी जी को दे दिए। गांधी जी ने सरसरी नजर में सारे कागज पढ़ लिए। उनमें तंत की तो कोई बात नजर आई नहीं। अतः उन्होंने उन कागजों में से All-Pin

निकाली और कागज Dust-Bin में फैंक दिए। उस आलोचक ने पूछा— गांधी महोदय! आपने इन कागजों से क्या निकाला? गांधी जी बोले— इनमें काम की एक चीज़ थी—All-Pin, वह मैंने निकाल ली, बाकी निःसार वस्तु Dust-Bin में डाल दी। आज ज़रूरत है हम भी उसी तरह का विवेक जागृत करें। जिसमें बेकार की बातें छूटें और काम की बातें हमारे पास रह जाएं। हम ऐसे गुरु की चर्चा कर रहे हैं जिनका जीवन विवेक की तीखी धार पर चलने में माहिर था। वे हर मौके पर विवेक रखते थे। उनमें वाणी का विवेक तो अद्‌भुत ही था। बोलते समय वे हर शब्द को तोल लेते थे, फिर अपने मुंह से निकालते थे। वे बार-2 कहते थे

**'शब्द सरीखा धन वही, जो कोई जाने बोल।**
**हीरा तो दामै मिले, शब्द का मोल न तोल' ॥**

गुरुदेव जी म. का एक-2 शब्द हीरे-मोतियों से ज्यादा बहुमूल्य होता था। उन्होंने जो बोला, मर्यादा में रहकर बोला, शास्त्रीय धारणाओं के मुताबिक बोला, बड़े-छोटे के सम्मान को सुरक्षित रखते हुए बोला। वे वक्त को देखकर बोलते थे तो वक्त को देखकर चुप भी हो जाते थे। कषाय क्लेश बढ़े, ऐसे वाक्य उन्होंने कभी नहीं बोले। वे आग बुझाने वाले जलधर थे, आग भड़काने वाले पैट्रोल नहीं। हम उनके अनुयायी हैं, उनसे विवेक की कुछ-2 कला तो सीखें। देखना हमारे जीवन में कितनी मधुरता पैदा हो जाएगी।

अब आइए, पूज्य गुरुदेव जी म. द्वारा निर्दिष्ट तीसरे सूत्र की ओर दृष्टिपात कर लें। वह है शांति। पहला है बचपन में विनय, दूसरा यौवन में विवेक, तीसरा है बुढ़ापे में शांति। आज शांति तो शायद ही कहीं उपलब्ध होती हो, सर्वत्र अशांति का बोलबाला है। उस अशांति का सबसे अधिक दुष्प्रभाव हमारी बड़ी और पुरानी पीढ़ी पर पड़ रहा है। उन्हें शारीरिक बिमारियां लगी हुई हैं। उनके हाथों से कमाई के साधन छिन चुके हैं। घरों की बागडोर उनके अधीन नहीं है। जो जब चाहे उनको डांटने-डपटने लगता है। ऐसी स्थिति में वे बेचारे बुजुर्ग अपनी दुरावस्था पर आंसू बहाने के अलावा कुछ भी नहीं कर पाते। दुःखी असहाय होकर अन्दर ही अन्दर कुढ़ते रहते हैं।

उन हालातों में पूज्य गुरुदेव जी म. ने उन्हें एक ही रास्ता बताया है, वह है पूर्ण शांति का। पूज्य गुरुदेव जी म. कहते थे, भले ही बड़े बुजुर्गों के पास आय के साधन न हों, हृष्ट-पुष्ट तन न हो, पर अपने मन के तो वे मालिक हो ही सकते हैं। उस मन पर तो किसी और का कब्जा नहीं है। इसलिए इस ढलती उम्र में शांति तो बनाए रख ही सकते हो। शांति की जरूरत यों तो पहले भी थी, बचपन और जवानी में भी थी, पर तब शांति नहीं थी तो काम चल सकता था। अब तो शांति से ही काम चलेगा। यदि अब भी मन अशांत रहा तो, आर्त-रौद्र ध्यान बढ़ जाएंगे, तीव्र कर्म बंध होने लगेगा। भाषा का CONTROL छुट जाएगा। मुँह से अनापशनाप बोल निकलने लगेंगे। धीरे-2 घर में तथा बाहर सर्वत्र अपमान, उपेक्षा और तिरस्कार का पात्र बनना पड़ेगा। ऐसी स्थिति में अशुभ लेश्याएं उदय में आने लगेंगी और फिर शांति खराब होने के पूरे-2 CHANCES हैं। जैसे-2 आपकी उम्र ढलने लगे वैसे-2 अपनी आदतों पर अधिकार जमा लो। उनमें पहली बात भोजन पर नियंत्रण करना शुरू कर दो। अधिक चटपटे, खट्टे, मीठे, तले पदार्थों का त्याग कर दो। इससे शरीर में नए रोग पैदा नहीं होगें। B.P., SUGAR, CHOLESTROL, KIDNEY PROBLEM, HEART आदि की समस्याएं नहीं उभरेंगी। दवाओं पर अधिक DEPENDENCE नहीं बढ़ेगी।

आहार संयम का एक पहलू है कि रात्रि का भोजन छोड़ दो या समय सीमा निर्धारित कर लो। दिन में ITEMS की संख्या तथा TIMES भी FIX कर लो। नम्बर दो : व्यापार आदि से पूर्ण या अल्प निवृत्ति ले लो। यदि परिवारजनों की अनुमति हो तो आप पूर्णतः अपने को कारोबार की जिम्मेवारी से मुक्त कर लो। यदि ऐसा लगता हो कि काम धंधे में हमारी जरूरत है तो केवल सहायक के तौर पर सबका साथ दे दो। अधिक दखलंदाज़ी से किनारा कर लो। आपको जो ठीक लगे वैसी सलाह दे दो। माने तो उनका धन्यवाद, न माने तो कोई शिकवा शिकायत नहीं। आपकी सलाह न मानने से नुकसान भी हो तो भी उलाहना नहीं देना।

क्योंकि अब आप मात्र ज्ञाता द्रष्टा की STAGE पर आ गए हो। आप TRUSTEE हो, मालिक नहीं। अपनी BASIC जरूरत के लायक संपत्ति अपने पास रखकर शेष पर अपना अधिकार छोड़ दो। या तो शुभ कामों में लगा दो या फिर परिवार जनों को सुपुर्द कर दो। फिर देखना आपके अन्तर्मन में शांति का समन्दर लहलहाता आएगा।

**मन में जब शांति होगी, जीवन में स्वर्ग होगा।**
**नहीं राग द्वेष होंगे, तब ही अपवर्ग होगा ॥**

वार्धक्य को अधिक सुखी-शांत बनाने वाले भाई बहनों के लिए तीसरा सूत्र है– निष्पक्ष व्यवहार। यदि आपके दो या तीन पुत्र हैं तो किसी एक को ज्यादा प्यार देना दूसरे की उपेक्षा करना आपके जीवन को विषाक्त कर सकता है। आपके लिए दोनों ही समान होने चाहिएं। आपने शायद पहले भी कभी पढ़ा हो या सुना हो, पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के चरणों में एक वृद्ध व्यक्ति आकर अपनी व्यथा को उंडेलने लगा। उसकी बातों को सुनकर पूज्य गुरुदेव जी म. भांप गए कि श्रावक भी खुद कहीं गलती पर है और दोष परिवार वालों को दे रहा है। गुरु म. ने उसकी स्थिति को PRACTICAL उदाहरण से समझाने के उद्देश्य से बिल्कुल अलग ही विधि अपनाई। उन्होंने पूछा, सेठ जी आपकी जेब में कुछ रुपये हों तो दिखाओ। आने वाले के लिए यह पहला अनुभव था कि श्री सुदर्शन मुनि जी म. ने रुपये की बात चलाई है। तो भी उसने अपनी जेब से दस रुपये के दो नोट निकाले और गुरु म. की ओर कर दिए। उन्होंने पूछा, अब देखकर बताओ कि इन दो नोटों का निर्माण वर्ष कौन-सा है। उसने देखकर बताया कि एक नोट 1950 में छपा है, दूसरा 1954 में। गूरुदेव जी म. ने उससे कहा कि अपने नोट को जेब में रख ले। उसने रख लिए, तब गुरुदेव जी म. ने उसी को आधार बनाकर कहा 'क्या अलग-2 वर्षों में छपने से इन नोटों की कीमत में फर्क है? वह कहने लगा, 'गुरुदेव, दोनों की कीमत बराबर है, दोनों में कोई अन्तर नहीं है'। बात को आगे बढ़ाते हुए पूज्य गुरुदेव ने उसे समझाया कि तुम्हारे दो पुत्र हैं, दोनों में 4 साल का अतंर है पर दोनो का महत्त्व बराबर है, दोनों

का हक बराबर है पर तुम एक से अधिक प्यार करते हो, दूसरे से कम। एक की बात ज्यादा मानते हो, दूसरे की कम। एक को प्रमुखता देते हो, दूसरे की उपेक्षा करते हो, तुम्हारे पक्षपात के कारण ही घर में अशांति है, झगड़ा है, वैमनस्य है। भाइयों में जो भेदभाव खड़ा किया है, वह तुम्हारे द्वारा निर्मित है, वे आपस में साथ रह लेंगे, बशर्ते कि तुम पक्षपात करना छोड़ दो। पूज्य गुरुदेव जी म. ने जब उसकी वास्तविक स्थिति उसे दिखाई तो बेचारा फूट-2 कर रोने लगा, अपनी गलती मानी और खुद को सुधारने का संकल्प लिया। उसने स्वयं को बदला, गुरुदेव की भी परोक्ष कृपा बरसी, बच्चों को सद्बुद्धि आई और घर में शांति की कलकल गंगा बहने लगी। तो ध्यान रखिए, पूज्य गुरुदेव फरमाते थे कि वृद्धावस्था में शांति हासिल करना चाहते हो तो पक्षपातपूर्ण व्यवहार छोड़ना होगा। जैसे हमने अभी कहा कि आपके कई बालक हैं तो सब पर समान भाव रखें। कुछ इसी तरह निष्पक्षता का दूसरा पहलू है पुत्र और पुत्रवधू को समान समझना। घर के क्लेशों में ये भेद भाव भी बहुत बड़ा ROLE PLAY करता है। घर में मां-बाप के लिए बेटा महत्वपूर्ण हो जाता है और बहू गौण। बहू देखती है कि मेरे सास-ससुर के दिल में मेरे लिए वो स्थान नहीं है जो अपने बेटे के लिए है। मुझे ये अपने घर का हिस्सा नहीं मानते, अपने सुखदुःख की चर्चा पुत्र से करते हैं, मुझसे छिपाते हैं। तो धीरे-2 उसके मन में भी इस घर की बजाय अपने पीहर की फिक्र पनपने लगती है फिर बात-2 पर ताने शुरू हो जाते हैं। व्यंग्य बाणों के प्रहारों से छोटे-बड़े सब घायल होने लगते हैं और घर, घर न रहकर लड़ाई के मैदान बन जाते हैं। DIVORCE के बढ़ते हुए अनुपात की STUDY करने पर एक बड़ा कारण ये भी पाया जायेगा कि सास-ससुर ने जब बहू से ज्यादा बेटे को तरजीह दी तब टकराव शुरू हुए फिर और कारण मिलते गए और अशांति का साम्राज्य छा गया।

आओ, इस पक्षपात की छानबीन और आगे कर लें। पुत्र और पुत्री में भेद-भाव। पुराने जमाने में तो ये भेदभाव भयंकर रूप से फैला हुआ था। अब कुछ-2 घटा तो है पर इतना नहीं जितना घटना चाहिए। अच्छे-2

धर्मात्मा घरों में भी बेटी को SECOND स्थान दिया जाता है प्रमुखता पुत्र को ही दी जाती है।

आपके घर में दो पुत्र हो जाएं तो कोई दिक्कत नहीं पर दो पुत्रियां हो जाएं तो माथे पर सलवटें आ जाती हैं। लोग बधाई देने की बजाय शोक प्रकट करने लग जाते हैं। खुद पुत्री को जन्म देने वाली माँ अपने को तथा अपनी जाई पुत्री को हीन दृष्टि से देखने लगती है। जिस घर में या जिस समाज में बेटा-बेटी में इतना फर्क समझा जाता है क्या वह घर या समाज धार्मिक घर-समाज है? शुद्ध अध्यात्म की दृष्टि से देखें तो वह ढोंगी और पाखंडी घर और समाज है। ऐसे घर में, समाज में पूजापाठ भी होते होंगे। सामायिक, संवर, त्याग, तपस्या, दान-पुण्य भी होते होंगे पर वास्तव में एक तरह से HYPOCRACY (पाखंड) है। दंभ है और पाखंड है ऐसे घरों में शांति रहेगी, ये कल्पना से परे की बात है। पुत्रियों की आहें और कराहें उन घरों को तबाह कर देती हैं।

हम लोगों में पक्षपात और भेदभाव की भावना इस कद्र घुस चुकी है कि हर मोर्चे पर हम इसके शिकार हो जाते हैं। बड़े घरों में ये बिमारी ज्यादा पाई जाती हैं। घर संयुक्त हो या व्यापार संयुक्त हो तब एक बात बार-2 उभर कर आती है कि बड़े बुजुर्ग, मुखिया लोग भाइयों के बच्चों की बजाय अपने बच्चों को अधिक तरजीह देना शुरू कर देते हैं। इस FAVOURITISM (पक्षपात) के कारण दूसरे बालकों में असंतोष पनपने लगता है।

धीरे-धीरे वे मुखिया का सामना करने लग जाते हैं और मुखिया अपनी गलती समझने मानने की बजाय शिकायत करने लगता है कि ये छोटे-2 बच्चे मेरा अपमान कर रहे हैं। उसके पास शिकायतों का पुलिंदा तो होता है पर अपने गरेबान में झांकने का मादा नहीं। एक POPULAR सी घटना जो पूज्य गुरुदेव जी म. भी फरमाया करते थे तथा ज्यादातर लोग जानते भी हैं कि दो भाई थे। एक ही दुकान, एक ही मकान, एक ही रसोई, एक ही लेन देन। राम लक्ष्मण की जोड़ी के रूप में दोनों भाई जाने जाते थे। दोनों के दो-2 बच्चे थे। उनमें भी खूब प्रेम

था। किसी को पता ही नहीं था कि कौन किसका बेटा है। एक दिन घर का मुखिया बाजार से आम खरीद कर लाया। उस समय छोटा भाई घर में बैठा खिड़की से बाहर झाँक रहा था। उसने देखा, बड़े भैय्या फल लेकर आ रहे हैं। तभी देखा कि चारों बच्चे फल लेने के लिए दौड़कर उधर बढ़ रहे हैं। बड़े भाई के एक हाथ में बड़े फल थे, दूसरे हाथ में छोटे फल थे। लेकिन एक PROBLEM आ गई। बड़े फल वाले हाथ की तरफ छोटे भाई के बच्चे थे, तथा छोटे फल वाले हाथ की तरफ उसके अपने बच्चे। उसने हाथों का रुख मोड़ा और बच्चों को फल दे दिए। बच्चों ने हँसते-2 फल ले लिए और खा लिए। उन्हें तो इतनी बारीक बातों का अहसास ही नहीं था पर छोटे भाई ने खिड़की से ये नजारा देख लिया, उसका माथा ठनक गया। शाम का खाना खाने के बाद वह भैय्या के कमरे में गया और हाथ जोड़कर बोला, भैय्या हम दोनों की बहुत निभ गई, आगे निभने वाली नहीं है इसलिए आप मुझे घर से और व्यापार से अलग कर दो। बड़े भाई को छोटे भाई की इस बात पर आश्चर्य हुआ। उसने कहा सब कुछ ठीक चल रहा है, ऐसी क्या बात हो गई जो तू अलग होने की बात करने लगा। छोटे ने कहा– दरअसल अब आपके दिल में फर्क आ गया है इस फर्क के कारण आपके हाथ कैंची बन गए हैं। कैंची काटने का काम करती है। बात को स्पष्ट करते हुए उसने कहा– जब आप फल लेकर आ रहे थे, तब आपने छोटे और बड़े फलों को मेरे और अपने बच्चों को देते वक्त हाथ क्यों दाएं से बाएं और बाएं से दाएं किये? हाथों की वह SHAPE कैंची की SHAPE बन गई थी। इसलिए मैं कह रहा हूँ कि आपके दिल में पहले जैसा समभाव नहीं रहा, निष्पक्षता नहीं रही, इसी कारण अच्छा है कि हम अलग-2 हो जाएं। बड़े भाई की आँखों में आँसू आ गए। उसे अपनी भूल समझ आई और छोटे के सामने हाथ जोड़कर क्षमा मांगी, आगे से ऐसा न करने की कसम खाई।

तो असली बात है कि पक्षपात पूर्ण रवैय्या अशांति का मूल कारण है।

**छत की ईंटें ही अगर बारूद से मिल जाएगी।**
**तो यकीनन घर की नीवें दूर तक हिल जाएंगी ॥**
**चिथड़ा-2 होके बिखरेंगे हमारे जिस्म ही।**
**आपकी बातें तो कपड़ों की तरह सिल जाएंगी ॥**
**यूं ही दीवारें अगर आंगन में अब उठती रहीं।**
**देख लेना रोशनी की कुहनियाँ छिल जाएंगी ॥**
**दो समानान्तर खिंची रेखाएं मत कहिए हमें।**
**हम वो आखें हैं कि जो लड़ते हुए मिल जाएंगी ॥**
**ये मेरे जख्मों की मुरझाई हुई कलियां 'कुंवर'।**
**मुस्करा कर कोई छू लेगा तो फिर खिल जाएंगी ॥**

मानव जाति को व घर और मन की शांति को बरकरार रखना हमारी जिम्मेदारी है। ये न समझें कि सब कुछ खत्म हो चुका है अभी हमारे हाथ में बहुत कुछ बचा है, गुरुओं की कृपा है कि अभी भी शांति की कुछ झलकियां हमारे जीवन में प्रकट हो जाती हैं पर अशांति का खतरा हमारे सिर पर मंडरा रहा है। उस खतरे को टालना हमारे वश में है। धर्म उस शांति का इलाज है। भगवान् महावीर स्वामी ने चार विश्राम स्थानों का बड़ा भव्य प्रतिपादन किया है। एक सद्गृहस्थ किस तरह अपने जीवन में शांति के छोटे-2 टुकड़े इकट्ठे करता-2 स्थायी शांति का प्रबन्ध कर लेता है।

पहले मैं एक शास्त्रीय दृष्टान्त का सहारा लेकर भूमिका बना दूं, फिर उसके चार विश्राम स्थानों को स्पष्ट कर दूँ। एक लक्कड़हारा लकड़ियों का गट्ठर अपने कंधे पर रखकर जंगल से घर की ओर आ रहा है। गट्ठर भारी है, लक्कड़हारा बुजुर्ग है, उस बोझ से उसका कंधा दुःखने लगता है, तो हिम्मत करके वह उस गट्ठर को दूसरे कंधे पर रख लेता है, जब दूसरा कंधा दुःखने लगता है तो पहले कंधे पर भार लाद लेता है। इस तरह उसके कंधों को बीच-2 में आराम मिल जाता है। शरीर से बोझ नहीं उतरा पर फिर भी आराम का अहसास हो जाता है। यह उसका पहला विश्राम स्थान है।

वह लक्कड़हारा आगे बढ़ता है। नदी का किनारा है सोचता है कि यहाँ मुंह धो लूं। किसी पत्थर पर अपना गट्ठर उतार हाथ-पैर-मुंह साफ कर लिए। 5 से 10 मिनट के लिए शरीर को राहत मिली। तरोताजा हुआ। फिर उस लकड़ी की गट्ठरी को कंधे पर उठाया और चल दिया। नदी किनारे का वह विश्राम अल्पकालीन था। शरीर की थकावट में RELIEF मिला पर दिमाग में तो यही रहा कि अभी गट्ठर उठाना है घर पहुंचना है। उस अल्पकालीन विश्राम को दूसरा विश्राम स्थान कहा जाता है। वही लक्कड़हारा चलते-2 गाँव के निकट पहुँचा, संध्या का समय होने जा रहा था। गाँव के बाहर एक मंदिर था। शंख और घंटियाँ बज रही थीं उस गरीब लक्कड़हारे ने सोचा मंदिर में प्रतिदिन आता ही हूँ, घर से वापस आऊंगा तो देर हो जायगी इसी वक्त प्रभु प्रार्थना कर लूं। उसने मंदिर के चबूतरे पर गट्ठर उतारा और पूर्ण भक्ति भाव से प्रभुगीत गाने शुरू कर दिए। कुछ देर भक्ति में लीन रह बाहर आया और अपने लकड़ी के गट्ठर को उठा कर चल दिया। जितनी देर मंदिर में वह लक्कड़हारा रहा उसका तन-मन हल्का रहा पर वह भी दीर्घकालीन नहीं था। पर विश्राम स्थान तो था ही, जिसे आगमकार तीसरा नम्बर देते हैं। फिर उस लक्कड़हारे ने गट्ठर उठाया और घर की ओर बढ़ा। घर वाले प्रतीक्षा में थे। उन्होंने उसका वजनी गट्ठर उतरवाया और किनारे रखवा दिया। अब उसका तन निर्भार और मन निश्चिंत हो गया। आराम से भोजन करता है। बच्चों से बात करता है। रात में चैन की नींद लेता है। घर आकर भार उतारना उसका चौथा विश्राम स्थान है। स्थानांग सूत्र में श्रावक जीवन के लिए भी चार प्रकार की साधनाएं बताई हैं जिनसे घर में रहते हुए भी उसे दुनियादारी का बोझ हल्का महसूस होता है। अणुव्रतों की पालना करना तो श्रावक की मौलिक आवश्यकता है ही पर जब उन व्रतों को कुछ सीमित कर लेता है तो उसे शील और गुणों की धारणा से बड़ी राहत मिलती है। जैसे कि वह खाता भी है, पीता भी है, ओढ़ता पहनता भी है पर अपने खाने पीने ओढ़ने पहनने की LIMIT बना लेता है तो उसके जीवन में कुछ हल्कापन आ जाता है। यद्यपि पूरी दुनिया उसके

दिमाग पर हावी है। घर है, परिवार है, व्यापार है, कारोबार है, लेन-देन है, कर्ज है, खर्चा है, रिश्तेदारी-दुश्मनी है। हजारों संकट उसकी जान को लगे हुए हैं पर अपनी व्यक्तिगत जरूरतें कम करने से उसको लगता है कि मेरा एक कंधा हल्का हो गया है। पूज्य गुरुदेव जी म. फरमाया करते कि ऐसा श्रावक तरणहार जीव होता है। वे अक्सर कहते थे– एक नाविक ने अपनी नाव में 100 घड़े पानी के रख लिए, दूसरे नाविक की नाव में सुराख के जरिए पानी आने लगा वह पानी थोड़ा है या ज्यादा पर नाव को डुबो देगा। जबकि घड़ों में रखे पानी से नाव को कोई खतरा नहीं है। ऐसे ही एक गृहस्थ जब अपने जीवन में व्रतों, नियमों को अपना लेता है तो उसके पाप घड़े में रखे पानी की तरह हानिकारक साबित नहीं होते। पूज्य गुरुदेव का सदा ये ख्याल रहता था कि हमारे श्रावक नियम व्रत धारी बनें। **''श्रावक वो ही उत्तम है, चर्या जिसकी उत्तम है।''** हमारी भी आपसे ये ही अपील है कि आप श्रावक के व्रतों को समझें। उनमें से जितना हो सके उतना ग्रहण करें। हम ये नहीं कहते कि आप आरंभ परिग्रह का बिल्कुल त्याग कर दें, पर इतना तो चाहेंगे कि उनकी मर्यादा बना लें और चौदह नियमों का अभ्यास करना शुरू कर दें। आपकी सांसारिक झंझटें तो भले ही बरकरार रहे पर आपकी निजी LIFE कुछ न कुछ RELIEF जरूर FEEL करेगी।

**''अपनी मर्यादा की सीता को संभाले रखना।**
**दृढ़ संकल्प के लक्ष्मण के हवाले रखना।**
**कोई रावण न उठाए, यों खबरदार रहो।**
**जिन्दगी भटक न जाए, यों खबरदार रहो॥''**

श्रावक जीवन का ये पहला विश्राम स्थान होगा। श्रावक जीवन में दूसरा विश्राम स्थान तब प्रकट होता है जब आप सामायिक कर रहे होते हो। दो घड़ी के लिए आप बिल्कुल भार रहित हो जाते हो। उस समय आपके अन्तर्मन में केवल समता-शांति और समाधि का संगीत बजने लगता है। उस समय आपको न बाल बच्चों का ध्यान होता, न दोस्त, न दुश्मन याद आते, न लेनदारी-देनदारी का टैंशन होता, न रिश्तेदारी

की जिम्मेवारियां याद आती। उस समय केवल आप होते हो या आपके आराध्य अरिहंत सिद्ध भगवान् होते हैं। वे दो घड़ियां आपकी 58 घड़ियों को सार्थकता प्रदान कर देती है। जैसे आप अपनी BATTERY को CHARGER पर लगाकर RECHARGE कर लेते हो ऐसे ही आप सामायिक में अपने मन को RECHARGE कर लेते हो। पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. ने हजारों-हजारों युवकों-बालकों को सामायिक की GIFT प्रदान की है, ये हमारी अनन्त पुण्यवानी है जो हमें ऐसी अनमोल विरासत सौंपकर गए। इस सामायिक को और अधिक सार्थक बनाने के लिए आपको एक सुझाव देना चाहूँगा। अपनी सामायिक के 50 मिनट के काल को आप पाँच भागों में बांट लो। पहले दस मिनट आप अपने शरीर को शिथिल करने में लगाए। पहले अपने मस्तिष्क भाग को शिथिल करें, RELAX करें। फिर चेहरे के तनाव को घटाएं, फिर गर्दन को, फिर कंधों को, बाजुओं को ढीला करें। यों क्रमशः छाती, कमर, पेट, टांगों और तलवों तक को शिथिल करने की प्रक्रिया प्रारम्भ करें। दस मिनट तक केवल एक ही काम करना है। बार-2 ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर BODY की अकड़न-जकड़नों को केवल RELAX करें। न माला करनी, न कुछ और करना। अगले दस मिनट के लिए आप प्रभु-भक्ति और गुरु भक्ति के एक दो गीत मस्ती में झूमकर गाएं। आपके सामने भगवान् खड़े हैं या गुरु, शेष सब कुछ नदारद। आप उनको रिझाने में लगे हैं। अपने को सौंप दो उनके हाथों में, एक छोटे बालक की तरह जो मां की गोद में जाकर सो जाता है। कहोः

**अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।**
**है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ॥**

कुछ भजन याद कर लें और उन्हें बदल-2 कर गाते रहें, बस शर्त ये है कि पूरी मस्ती हो, पूरी भक्ति हो। 10 मिनट पूरे होने के बाद आप अपने पिछले 24 घण्टे का REVISION करें। आपके मन में क्या-2 ख्याल आए? आपने पिछले 24 घण्टों में क्या-2 किया? क्या-2 बोला? उस प्रत्येक घटना की REEL को दोबारा से देखें। आप किसी भी घटना

की न निंदा करें, न प्रशंसा करें। न ये कहें कि मैंने ये गलत किया या ये अच्छा किया था। न JUSTIFY (सिद्ध) करना, न CONDEMN (निषेध) करना। केवल देखना मात्र है। ये एक तरह से 24 घण्टे का 10 मिनट में प्रतिक्रमण हो जाएगा। इस प्रक्रिया के बाद आप दस मिनट के लिए कोई सरल पुस्तक का स्वाध्याय करें। जिस विषय को आप अच्छी तरह समझ सकें, वही पढ़ें, अभी कठिन विषय पर मत जाएं। अब तो हम आपको सलाह देगें कि 10 मिनट के लिए पूज्य गुरुदेव जी म. की जीवनी को ही पढें। उस जीवनी में आप मग्न हो जाओगे। हो सकता है गुरुदेव के किसी घटना प्रसंग से आप के जीवन में U-TURN भी आ जाए।

अब बचे 10 मिनट, उस दौरान आप आनुपूर्वी, माला, जाप कुछ भी कर सकते हैं। ज्यादातर सामायिक करने वालों को FEEL होता है कि सामायिक में मन नहीं लगता पर आप इस विधि से सामायिक का अनुष्ठान करोगे तो पूर्ण विश्वास है कि आपका मन सामायिक में लगेगा और दो घड़ी का वह विश्राम स्थान आपके जीवन के स्मरणीय पलों की प्रथम पंक्ति में शामिल हो जाएगा।

श्रावक के तीसरे स्थान में आता है पौषध व्रत का आराधन। आगमकारों के अनुसार प्रत्येक श्रावक को पन्द्रह दिन में एक बार पौषध अवश्य करना चाहिए। **''पोसहं उभओ पक्खं एगरायं न हावए''**। पक्खी के दिन श्रावक के लिए पौषध अनिवार्य है। 24 घण्टे के लिए व्यापार, आहार, स्नान, श्रृंगार और संसार के हर कार्यकलाप से सर्वथा मुक्त हो जाता है। पिछले दो सप्ताह में शरीर में आहार जन्य जो TOXIC (विषैला) असर आया होता है उसका निराकरण हो जाता है, क्योंकि पूरी तरह आहार का त्याग हो जाता है तथा मन में जो विषमता-बेचैनी, उथल-पुथल चल रही होती है वह भी रुक जाती है। सामायिक में जो राहत मिलती है वह दो घड़ी की होती, पौषध में वही राहत 60 घड़ी तक चलती रहती है उसका असर ज्यादा गहरा और लंबा चलता है। आजकल हमारे इलाके में बहुत थोड़े लोग हैं जो REGULAR पौषध करते होंगे। जयपुर आदि कई क्षेत्रों में ऐसे श्रावक हैं जो अष्टमी पक्खी के दिन

प्रायः पौषध करते ही करते हैं। अपने यहां तो पौषध केवल 'संवत्सरी' के साथ ही जुड़ा हुआ अनुष्ठान है। अब जरूरत है पौषध का थोड़ा ज्यादा अभ्यास करना प्रारंभ करें। पहले हर चौमासी पर पौषध करने की शुरुआत करें। फिर महीने में एक बार तक लाएं फिर पन्द्रह दिन में और बढ़ते-2 प्रति सप्ताह पौषध की आराधना का क्रम बनाएं। फिर देखना कि ये तीसरा विश्राम स्थान आपकी जिन्दगी में नई क्रांति पैदा कर देगा। बहुत अधिक आनन्द की वर्षा होने लगेगी। चौथा और अंतिम विश्राम स्थान है, 'संलेखना संथारा'। इस POINT पर पहुंचकर श्रावक शरीर, संसार, कषाय, कर्मों का सारा बोझ उतार कर पूर्णतः निर्भार होकर परलोक की, आत्मा की आराधना में लीन हो जाता है।

**प्रभु का मार्ग है पाया, तो ये संसार क्या करना।**
**मुसाफिर को सफर में है, उठाकर भार क्या करना ॥**

संलेखना संथारा करने से पूर्व श्रावक को अपने जीवन की शुद्ध और संपूर्ण आलोचना करनी होती है। अपने परिवार जनों, मित्रों, दुश्मनों से हार्दिक क्षमा याचना करनी भी जरूरी है। अठारह पापों का तीन करण तीन योग से पूरे होशोहवास में प्रत्याख्यान करना है। शरीर और आत्मा की भिन्नता का अहसास करते हुए अंतिम श्वासोच्छ्वास तक शरीर की ममता को छोड़ना होता है। अब उसे किसी से न राग होता, न द्वेष होता, न जीवन की इच्छा रहती, न मरने की अभिलाषा रहती। इस लोक परलोक की हर तमन्ना से ऊपर उठकर उसे मात्र अपनी आत्मा के ध्यान में लीन होना है। ये संथारा उस श्रावक लिए अंतिम विश्राम स्थान है, जहाँ किसी प्रकार का न तनाव है, न दुराव और न छिपाव है। इस तरह वह श्रावक ऊंची साधना का अधिकारी बन जाता है।

तो मैं बता रहा था जिन श्रावकों को अपनी आखरी जिन्दगी में शांति पानी है उन्हें इन चार विश्राम स्थानों की जानकारी भी होनी चाहिए और उनका अभ्यास भी।

हम आपके क्षेत्र में विशेष लक्ष्य लेकर आए हैं, हमारे आराध्यतम गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. का जन्म शताब्दी वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। हम उनके जीवन चरित्र से तथा उनके उपदेशों, शिक्षाओं से परिचित हों और अपने जीवन में उन्हें उतारें, ये हमारा दायित्व बनता है। आप सब लोगों ने उपस्थित होकर उस महान आत्मा के प्रति अपनी आस्था जताई, इसके लिए हम आपका आभार मानते हैं।

# जीवन–परिचय

## मंगलाचरण

**निज पवित्र चारित्र के कारण, गुरुवर सा पाया गौरव,**
**है समाज जागृति का कारण, जिनके प्रवचन का सौष्ठव।**
**तुच्छ लाभ के लिए शिथिलता, संयम में न जिन्हें भायी,**
**उन श्रद्धेय सुदर्शन गुरुवर, की सेवा है सुखदायी ॥**

जिनशासन के जागरूक श्रावक एवं श्राविकाओ, संघशास्ता गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के सारे भक्तों को सादर जय जिनेन्द्र।

आज हम मिलकर एक नई संवत्सरी मनाने, या महावीर जयंति मनाने के लिए उपस्थित हुए हैं। आज 4 अप्रैल (चैत्र बदी पंचमी, संवत् 1980) है, पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के जन्म शताब्दी वर्ष का प्रथम दिन है। सन् 1923, 4 अप्रैल बुधवार के दिन रोहतक शहर, बाबरा मौहल्ले की मदीना गली में गर्ग गोत्री, जैन धर्मी श्री जग्गूमल जी के खानदान में एक दिव्य आत्मा का अवतरण हुआ था। पिता श्री चन्दगी राम जी वकील साहिब एवं माता सुन्दरी देवी को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी। समग्र संसार को, जिनशासन को एक खिवैय्या मिला था। उस दिन धरती धन्य हुई थी, अम्बर पुण्यवान् बना था।

पूज्य गुरुदेव के परिवार में जहां वैष्णव परम्परा की मौलिकता थी वहां जैन धर्म का विशुद्ध आचरण भी गहराई तक समाया हुआ था। वास्तव में हरियाणा के अग्रवाल परिवारों में सनातन और जैन संस्कारों का समन्वय पाया जाता है। यहाँ सबका सम्मान है सबकी स्वीकृति है।

**अलग-अलग हैं दीप मगर है सबका एक उजाला।**
**सबके सब मिलकर काट रहे हैं अन्धकार का जाला ॥**
**किसी एक के भी अंतस का, स्नेह न चुकने पाए।**
**तम के आगे ज्योति पुञ्ज का, शीश न झुकने पाए ॥**

ये पारस्परिक तालमेल सभी को अच्छा लगता है।

पूज्य गुरुदेव का पहला नाम 'ईश्वर' रखा गया। बाबा जग्गूमल जी अपने पोते पर प्यार तो उंडेलते ही थे, उनमें संस्कारों का बीज रोपण भी करते थे। उनका अपना जीवन भी आदर्श जीवन था। छोटी उम्र में ही शादी हो गई थी। तीन पुत्रों के जन्म तथा पत्नी के देहान्त के बाद उन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य का नियम ले लिया था। चारित्र चूड़ामणि श्री मयाराम जी म. से रात्रि चौविहार (भोजन-पानी त्याग) एवं गुरु धारणा का पच्चखाण ले लिया। बढ़ते-2 उन्होंने कच्ची-पक्की हरी फल फ्रूट का भी नियम ले लिया था। अब उनके भोजन में दाल, कढ़ी, मगौंड़ी आदि ही रह गए। सब्जियां भी बन्द हो गईं। जैन समाज में चार खंधों के नियम का महत्त्व रहा है, उन चार में से तीन खंधों का पालन श्री जग्गूमल जी करते थे। ऐसे त्यागी बाबा जी की गोद में बालक ईश्वर को त्यागी तपस्वी मुनियों की सुलभ कृपा मिलनी प्रारम्भ हो गई। वे गुडलियां चलना भी बाबरा मौहल्ला की स्थानक में सीखे थे। पिता श्री चन्दगी राम जी का HIGH INTELLIGENCE QUOTIENT (तीव्र बुद्धिमत्ता) उनके GENES में था। पिता जी स्वाध्याय के इतने रसिक और अभ्यासी थे कि सारा उत्तराध्ययन उन्हें अर्थ सहित जबानी याद था। ये सब कुछ पूज्य गुरुदेव जी म. को गुप्त विरासत की तरह मिला।

उनकी माँ सुन्दरी आदर्श महिला थी। वैष्णव परिवार की बेटी थी तो ठाकुर द्वारे में भी जाती थी। जैन घर की बहू थी तो साधु संतों की निर्दोष सेवा भी किया करती। ममता से भरी उस माँ ने बालक को सहनशीलता, गम खाना आदि लोरियों में ही सिखाया था। एक बार माँ के साथ बालक ईश्वर मंगलवार के दिन मंदिर में गया। पुजारी ने माँ और बेटे दोनो को प्रसाद दिया पर बाहर आते ही बालक का प्रसाद हाथ से छूट कर नाली में गिर गया। माँ ने तुरन्त अपने हाथ का प्रसाद बालक को खिलाकर चुप करा दिया और माँ की ममता के स्वरूप को भी समझा दिया। बालक को किसी साथी बालक ने पीट दिया। बालक माँ के पास रोता-2 आया, साथी बच्चे की शिकायत की, तो माँ ने बालक को साड़ी के पल्लू में

लपेट सीने से लगा लिया। माँ ने बालक की शिकायत भी भुला दी और शिकायती NATURE भी बदल दी।

ऐसे वातावरण में पले बालक ईश्वर को घर में लोग खासकर बाबा जी सुखदर्शन भी कहने लगे। बालक सुखदर्शन जब संतों की कथा में बैठता, उस समय संत यदि सेठ सुदर्शन की कथा सुना रहे होते तो बालक ईश्वर मस्ती में झूमने लगता, ऐसा दृश्य देखकर संत उसे ही सुदर्शन कह देते। सब प्रकार की अनुकूलताएं चल रही थी पर अचानक एक वज्रपात हुआ। माँ सुन्दरी ने चार साल बाद एक सलौने पुत्र को जन्म दिया और देखते-2 स्वयं काल कवलित हो गई और नवजात पुत्र भी। परिवार ताकता रह गया, पर बालक सुदर्शन का तो संसार ही उजड़ गया। माँ को तो चिता ने राख बना ही दिया, बालक को भी पल-2 दुःख संताप में जलने के लिए विवश कर दिया।

**पल-2 जलता है श्मशान, पल-2 जलती रोज चिताएं,**
**हरा भरा संसार जलाएं, जलती कितनों की आशाएं,**
**मन होता सुनसान, पल-2 जलता है श्मशान ॥**

**बच्चों, किसे ढूंढने आए, क्यों तुम सबके मुँह कुम्हलाए,**
**रोते थे कुछ कह नहीं पाए, वो भोले नादान,**
**पल-2 जलता है श्मशान ॥**

माँ के बिना बालक की कितनी दयनीय स्थिति हो जाती है इसका चित्रण पंजाबी के कवि ने किया है–

**मरी जदों दी है माँ, सुन्ना हो गया जहाँ,**
**दिन रात मैं दुहाइयां ए हो पावां,**
**एहदे नालो मैंनू चुक्क ले रब्बा।**

**मारी ना मासूमा दियां मावां,**
**ऐहदे नालो मैंनू चुक्क ले रब्बा,**
**मावां तो बगैर सुन्ना लगदा ऐ जग जी,**
**एन्हां तो वगैर चुल्हे कौन बाले अग्ग जी,**

**खोह लैंदे टुक कांवां**
**ऐहदे नालो मैंनु चुक्क लै रब्बा ॥**

माँ गई, मासी आई वह भी चली गई, फिर एक और मासी आई

गम, खुशी, गम, खुशी, यों तीव्र परिवर्तनों ने बालक सुदर्शन की LIFE को UNSETTLE सा कर दिया। फिर भी जीवन अपनी रफ्तार से आगे ही बढ़ता गया और बाबा श्री जग्गूमल जी छत्र की तरह उस अमूल्य जीवन को संभालते रहे। पिता जी ने यथाशक्य देखभाल की। चाचा श्री शामलाल जी, जो दिल्ली में Teaching job में थे, उन्होंने भी खूब देख-भाल की। चाची कलावती जी ने माँ की तरह प्यार दिया।

गुरुदेव की जिंदगी में EDUCATION और RELIGION का अच्छा COMBINATION (मेल) बना। पिता जी उन्हें JUDGE बनाना चाहते थे। उनकी प्रेरणा थी। गुरुदेव स्वयं प्रतिभा के धनी थे, तथा पढ़ने का शौक रखते थे तो पढ़ते गए। पर उनकी पढ़ाई REGULAR नहीं रही, कभी रोहतक तो कभी दिल्ली। बाबाजी के कारण उन्हें संतदर्शन, सामायिक, संवर का शौक लगा। मास्टर श्री शामलाल जी ने उन्हें दिल्ली बारादरी में पधारने वाले संतो से जोड़े रखा। समाज और राष्ट्र के प्रति ये स्वतः ही समर्पित रहे। धर्मरुचि की अधिकता के कारण वे ज्यादा Social नहीं बनें। खेलकूद का शौक खास नहीं रहा। दोस्तों के साथ बाहर घूमने-फिरने की आदत भी न बनी। दोस्त भी LIMITED ही थे। अच्छा जिगरी दोस्त तो उनका हंसराज ही था। शादी के कुछ दिनों बाद ही उसकी यमुना में डूबने से मृत्यु हो गई। उस घटना ने गुरुदेव की चिन्तन धारा को झिंझोड़ा और मोड़ा। सबसे बड़ा TURNING POINT तब आया, जब उनके बाबा श्री जग्गूमल जी ने बिना किसी को बताए, सन् 1937 में व्याख्यान वाचस्पति गुरुदेव श्री मदनलाल जी महाराज के चरणों में दीक्षा ले ली। बाबा जी यों तो घर में भी सन्यासी सा जीवन बिता रहे थे, पर अचानक दीक्षा ही ले लेंगें, ये किसी के दिमाग में नहीं था। कम से कम श्री गुरुदेव जी म. को ऐसा नहीं लगता था। बाबा जी की प्यार भरी गोद में जीवन निश्चिंता के साथ गुजर रहा था। उनकी दीक्षा ने

इन्हें अन्दर से तोड़ दिया। अब मेरा क्या होगा? ये प्रश्न उनके जहन में लटकती तलवार बन गया। अपने चाचा मास्टर शाम लाल जी को लेकर बाबा जग्गूमल जी से मिलने गए। उस समय व्याख्यान वाचस्पति गुरुदेव श्री मदनलाल जी म. सा. रिवाड़ी में आए हुए थे, श्री बाबा जग्गूमल जी म. उनके चरणों में थे। गुरु महाराज उनके पास जाकर रोने लगे।

शिकायत यही थी आप साधु क्यों बन गए। जब रोना रुका ही नहीं, तब बाबा जी म. ने कहा– सुदर्शन! तुझे भी दीक्षा लेने का भाव बन जाए, तेरा भी भाग्य खिल जाए, इसलिए मैंने दीक्षा ली है। और कमाल हो गया, गुरुदेव जी म. के अन्धकार पूर्ण मन में आशा की झिलमिल किरणें जगमगाने लगी, एक दिशा मिल गई। एक विचार को आकार मिल गया और धीरे-2 वह विचार संकल्प बन गया।

मैट्रिक पास करने के बाद उन्होनें COLLEGE JOIN नहीं किया। क्योंकि उस ओर जाना ही नहीं था। पिता, मामा, चाचा कई तरह के दबावों को उन्हें झेलना पड़ रहा था। आदमी एक–कदम चार जगह, पिताजी कहते– मेरे साथ रोहतक COURT में चल। मामा कहते, नजफगढ़ की SHOP पर बैठ। चाचा कहते– आगे की पढ़ाई के लिए DELHI रहो। मन कहता बाबा जी के पास जाकर वैराग्य भाव को पुष्ट कर। इस चौमुही जंग का नतीजा आया 1941 में, जब वे परिवार से बिना पूछे, पटियाला में वाचस्पति गुरुदेव व बाबा जी म. के चरणों में जा पहुंचे।

**जिसने ठुकराया है दुनियां की इस दौलत को।**
**उसकी निगाह में कोई और ही दौलत होगी ॥**

इस बार परिवार वाले इन्हें वापस लेने आए तो मोर्चा संभाला, श्री जग्गूमल जी म. ने। बोले– "ये मेरे पास रहेगा, मेरी सेवा करेगा।" सब को चुप होना पड़ा और गुरुदेव जी म. की जीवन दिशा एकदम CLEAR हो गई। एक स्थिरता बनी और ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय के नए आयाम खुलने लगे। पूज्य गुरुदेव जी म. के वैराग्य-जीवन में एक अद्‌भुत व्यक्तित्व का

और प्रवेश हुआ। वे थे बहुसूत्री सरलात्मा श्री नाथूलाल जी म.। इन्होंने गुरुदेव जी म. की आध्यात्मिक विकास की गहरी बुनियादें तैयार कर दी। द्रव्य और भाव संयम क्या होता है, निश्चय और व्यवहार दृष्टि क्या होती है इसको समझाने के लिए पूज्यपाद श्री नाथूलाल जी म. ने अपने जीवन और जिह्वा दोनों से गुरुदेव को निहाल कर दिया। गुरुदेव का वैराग्य दो बाबाओं की गोद में पुष्ट होने लगा। घर के नाते बाबा श्री जग्गूमल जी म. सा., संघ की दृष्टि से दादा गुरुदेव श्री नाथूलाल जी म. उनको स्नेह से लबालब करते जा रहे थे। कुछ ही दिनों में वाचस्पति गुरुदेव ने पाया कि सुदर्शन हर लिहाज से योग्य है, विनयवान है, बुद्धिमान है, संयम रुचि युक्त है तथा सेवा भावी है। अतः इनकी दीक्षा की घोषणा कर दी। 18 जनवरी, 1942 के रोज संगरूर में पावन जैन भागवती दीक्षा का आयोजन रखा गया। पंजाब संप्रदाय के तत्कालीन उपाध्याय श्री आत्माराम जी म. सहित 33 महामुनिराज उस समारोह में उपस्थित हुए। दीक्षा पाठ उनके मुखारविंद से हुआ तथा शिष्य बने– व्याख्यान वाचस्पति गुरुदेव श्री मदनलाल जी म. के। बाबा श्री जग्गूमल जी म. प्रथम शिष्य थे तथा गुरुदेव श्री सुदर्शनलाल जी म. दूसरे शिष्य बने।

उसी साल बहुसूत्री सरलात्मा श्री नाथूलाल जी म. के आकस्मिक स्वर्गवास ने एक बार तो सपनों को चूर-2 कर दिया पर धीरे-2 संयम साधना और समता भाव के अभ्यास ने उस आघात से ऊपर उठा दिया। वाचस्पति गुरुदेव तथा उनके सखा योगिराज श्री रामजीलाल जी म. सा. की भरपूर वैयावृत्य से गुरुदेव जी म. का प्रारंभिक काल पुख्ता हो गया।

**पुव्वाइं वासाइं चरेऽप्पमत्तो तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोक्खं**

दीक्षा के पहले सालों में यदि अप्रमत्ता का अभ्यास हो जाए तो मुक्ति की प्राप्ति शीघ्र हो जाती है।

पूज्य गुरुदेव जी म. का सेवा के बाद दूसरा TARGET ज्ञान की आराधना बन गया। जैन आगम, संस्कृत, प्राकृत का गहरा अध्ययन, दार्शनिक ग्रन्थों का पारायण उन्होंने इतनी स्पष्टता और शीघ्रता से किया

कि उन्हें पढ़ाने वाले शिक्षक हैरान रह जाते थे।

पूरे तीन साल बाद इनके जीवन में एक नई बयार आई। इन्हें चार नए गुरु भाई मिले। जिनमें से सेठ श्री प्रकाशचन्द्र जी म.सा., भगवन् श्री राम प्रसाद जी म. के सर्वाङ्गीण विकास का दायित्व गुरुदेव जी म. के कंधों पर आया। गुरुदेव जी म. ने दोनों ही गुरु भ्राताओं को तीन साल की पढ़ाई का सार एक साल में ही सौंप डाला। उनकी बुनियादें मजबूत कर दी।

उसी साल वाचस्पति गुरुदेव जी म. ने उन्हें प्रवचन के क्षेत्र में उतार दिया। उनकी व्याख्यान शैली से वाचस्पति गुरुदेव इतने प्रभावित हुए कि बोले, तेरी धर्म सभाओं में हजारों श्रोता आया करेंगे। उनका दिया हुआ वह आशीष बहुत जल्दी ही फलीभूत हुआ।

**गुरु जिस पर ठण्डी निगाह कर देते हैं।**
**खाली झोली को नैमतों से भर देते हैं॥**

सन् 1946 में तो उन्हें चातुर्मास का पूर्ण दायित्व देकर श्री बाबा जी म.सा. की निश्राय में अहमदगढ़ मण्डी में भेज भी दिया। उतनी थोड़ी सी TRAINING, इतनी छोटी दीक्षा, पर गुरु कृपा तथा आत्म विश्वास से लबरेज गुरुदेव ने पहले ही चातुर्मास में धूम मचा दी।

जिन शासन को अद्भुत प्रवचनकार मुनि मिल गया। उससे अगले साल इससे भी बड़ा दायित्व मिल गया। मूनक में विराजमान गणावच्छेदक श्री बनवारी लाल जी म. की सेवा के साथ-2 तपस्वी श्री फकीर चन्द जी म., बाबा श्री जग्गूमल जी म. की सर्वविध सेवा तथा समाज जागरण का महान् कार्य।

1947 का वह स्वतंत्रता वर्ष तथा विभाजन वर्ष सारे देश के लिए चुनौती भरा था। जब सारा पंजाब कत्लोगारत की आग में झुलस रहा था। तब गुरुदेव जी म. ने मूनक और समीपवर्ती इलाके में प्रेमशांति, अम्नो-अमान के अमृत निर्झर बहाए थे। उनका संदेश था—

**अच्छा नहीं शोलों को भड़का के मजा लेना,**
**इस आग में तुम दामन अपना न जला लेना।**
**खुदा ने बक्शा है जन्नत सा वतन अपना,**
**इस जन्नत को लोगो! दोजख न बना लेना ॥**

संघ के मोर्चे पर मूनक समाज का एकीकरण किया। बिखरे सिरे आपस में मिलाए। उस संगठित समाज ने स्थानक का निर्माण किया। सेवा धर्म के गुरू म. शुरू से ही MODEL बनकर जीए थे। तीन-2 बुजुर्ग संतो का हर कार्य गुरुदेव जी म. संपादित करते थे। तीन वक्त का आहार, तीन चार बार पानी लाना, सबके वस्त्रों की प्रतिलेखना, आगम को सुनाना, बड़ों के चरणों की वैयावच्च, हर काम पूर्ण तत्परता से, स्फूर्ति से करते रहे। श्री बनवारीलाल जी म. ने कहा था– 'सुदर्शन! मेरी आत्मा तेरी सेवा से पूरी तरह संतुष्ट है।' उन पावन गुरुओं की कृपा पाकर इन्होंने भी अपने उस वर्ष को GOLDEN YEAR का नाम दिया था। अगला साल गुरुदेव जी म. ने सुनाम के नव निर्माण में लगाया। जहां उन्होंने जैनों के साथ-2 अजैन परिवारों पर भी अपनी वाणी का जादू चलाया। सैकड़ों अजैन परिवार जैन विधि विधानों से, आचार-विचारों से जुड़े। 70-75 वर्ष बाद आज भी गुरुदेव के श्रम की छाप सुनाम में दिखाई देती है।

सन् 1949 का चौमास बड़े बुजुर्ग मुनियों की सेवा में जींद में हुआ। फिर हरियाणा की माटी को पावन करते हुए पूज्य गुरुदेव जी म. बाबा श्री जग्गूमल जी म. की वार्धक्य में सेवा करने हेतु दिल्ली में पधार गए।

उत्तराध्ययन सूत्र में लिखा है– "तस्सेस मग्गो गुरु विद्ध सेवा" मुक्ति या आत्मशांति का पहला उपाय है "गुरु और वृद्धजनों की सेवा करना" बाबा श्री जग्गूमल जी म. गुरु भी थे और वृद्ध भी थे। उनकी सेवा में अपनी जवानी का क्षण-2, जिस्म का कण-2 होमने वाले गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी म. दिल्ली में नए इतिहास का निर्माण करने पधारे थे।

1950 की दिल्ली 2022 की दिल्ली में कितना फर्क आ गया है, ये

आप खुद कल्पना करें। उस समय दिल्ली का मतलब था पुरानी सब्जी मण्डी (कोल्हापुर रोड), सदर बाजार तथा चाँदनी चौक। श्री बाबा जी म. की छत्रछाया में गुरुदेव ने चांदनी चौक को स्थाई रूप से रहने के लिए चुना। कई कारण थे। पूज्यपाद चारित्र-चूड़ामणि श्री मयाराम जी म. तथा गणावच्छेदक श्री छोटेलाल जी म. के जमाने से चाँन्दनी चौक का क्षेत्र इस गुरु परम्परा के प्रति समर्पित रहा है। सैकड़ों जौहरी परिवार आगमीय समाचारी के हिमायती थे। शास्त्रीय प्रवचनों के आदी थे। मास्टर श्री शामलाल जी जैसे महान् व्यक्तित्व का आवास भी वहीं था। गुरु महाराज की किशोर उम्र के कई वर्ष वहाँ व्यतीत हुए थे।

गुरुदेव पधारे तो चाँदनी चौंक का कण-2 झूम उठा। उसी साल राजस्थान के महान् आचार्य श्री गणेशीलाल जी म. भी वहाँ पधारे। उनके साथ जुड़ी आत्मीयता ने इतिहास को समृद्ध किया। वर्तमान को मधुर बनाया तथा भविष्य को स्वर्णिम रूप दिया। दिल्ली चाँदनी चौंक बारादरी का वह नौ वर्षीय स्थिरवास अध्यात्म क्रान्ति का सुनहरी अध्याय बना। उस समय पूज्य गुरुदेव ने जो पद चिन्ह निर्मित किए वे युगातीत और कालजयी सिद्ध हए। अमेरिकन कवि ROBERT FROST की कविता की चंद लाइने हैं–

**Thousand people have been coming on earth,**
**But only the very few sustain their print on sand of time.**

अर्थात् हजारों व्यक्ति इस धरती पर जन्म लेते हैं परन्तु उनमें से बहुत कम ही अपनी पहचान दुनिया में बना पाते हैं।

सभ्यता के आदि काल से हजारों मानव यहाँ आए हैं, पर कुछ गिने चुने व्यक्ति ही वक्त की रेत पर अपनी छाप छोड़ कर जाते हैं। उस लम्बे प्रवास में पूज्य गुरुदेव ने अपनी असीम ऊर्जा से बहुमुखी आयामों को प्राणवंत बनाया। बारादरी पूरे भारत का केन्द्र होने से वहाँ राजस्थान, मारवाड़, मेवाड़ के धुरंधर मुनि पधारते थे। उत्तर भारत के प्रमुख-2 मुनियों का आगमन तो होता ही रहता था। पूज्य गुरुदेव जी म. ने सबके साथ उदारता पूर्ण व्यवहार किया। सबको अपना बनाया सबको सम्मान

दिया। अपनी संयम मर्यादाओं को अक्षुण्ण रखते हुए उन्होंने सबको अपनत्व से ओतप्रोत किया।

चाँदनी चौक के प्रत्येक घर, प्रत्येक सदस्य को धर्मानुराग से रंगा। घर-2 में सामायिक संवर के दीप प्रज्वलित किए–

**तुमने हजारों दीपक संसार में जलाए,**
**ठहरे हर मुसाफिर सन्मार्ग पर चलाए,**
**संस्थाओं की तरफ तो नहीं ध्यान था तुम्हारा,**
**श्रावक व साधुओं का जीवन बहुत संवारा,**
**तेरी याद सबके दिल में आए व जगमगाए,**
**तुमने हजारों दीपक संसार में जलाए ॥**

उच्च घरानों के होनहार युवकों में वैराग्य भावना का संचार किया। कितने ही युवक अपना जीवन आपको समर्पित करने आए, उनमें से प्रथम त्रिवेणी गणाधीश श्री प्रकाश चंद जी महाराज, संघनायक शास्त्री श्री पद्म चन्द जी म. व कृपानाथ श्री शांति चन्द्र जी म. श्रेष्ठतम रचना के रूप में निखर कर आए। उच्चता के आदर्श ये तीनों वैराग्य काल में 4-5 वर्ष तक गुरुदेव से Training लेते रहे और अंत में 1958 में दीक्षित हो गए।

गुरुदेव श्री जी अपने लिए भी सघन ज्ञानाभ्यास करते रहे। महावीर जैन लाइब्रेरी के विशाल ग्रंथ संग्रह की प्रत्येक उपयोगी पुस्तक पूज्य गुरुदेव ने उस स्थिरवास काल में पढ़ी।

चाँदनी चौक विभिन्न समाजों का रंगस्थल था। वहाँ राजस्थानी Culture वाले जौहरी थे, पंजाब के भावड़े, हरियाणा तथा यू.पी. के अग्रवाल जैन थे। गुरुदेव जी म. सबके श्रद्धेय थे और सब उनके उपासक थे। यदि उस संघ में छोटा या बड़ा विवाद भी खड़ा हुआ तो भी गुरुदेव उसमें INVOLVED नहीं हुए।

**जहा पोम्मं जले जायं नोवलिप्पइ वारिणा,**
**एवं अलित्तं कामेहिं तं वयं बूम माहणं ॥**

जैसे कमल पानी में रहकर भी पानी में डूबा नहीं रहता, ऐसे ही पूज्य गुरुदेव संसार के झमेलों से अलिप्त रहते थे। वे समाज को मार्ग दर्शन देते थे, संभालते थे पर उलझते नहीं थे।

उस दौरान गुरुदेव ने सरल जनोपयोगी साहित्य का प्रचुर निर्माण किया। गद्य, पद्य, निबंध, नाटक, काव्य विचार-कण आदि विधाओं को समृद्ध किया, पर संघ में प्रकाशन की परम्परा न होने से सारा साहित्य 'पाण्डुलिपि' रुप में ही रहा और उसका भी अधिकांश भाग गुरुदेव ने 30-40 वर्ष बाद स्वयं ही नष्ट कर दिया। ये सोचकर कि अब अपरिग्रह का ये पक्ष भी उद्घाटित करना है।

10 मई, 1959 आखा तीज के दिन बाबा श्री जग्गूमल जी म. सा. के देवलोक गमन से गुरुदेव जी म. को पुनः मातृ-विरह का-सा झटका लगा। माँ की विरह वेदना को बाबाजी की गोद ने कम किया था तो बाबा जी के विरह दुःख को गुरुवर्य व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म. के आगोश ने दूर किया।

सन् 1959 से गुरुदेव जी म. की प्रभावनाओं का दायरा समग्र उत्तर भारत बना, वाचस्पति गुरुदेव श्री मदनलाल जी म. ने उस वर्ष अपना चातुर्मास कांधला को दिया और अपने योग्यतम शिष्य का चातुर्मास बड़ौत को दिया।

नौ साल से दिल्ली के दायरे में बहने वाली धर्म प्रभावना की वायु बड़ौत आते ही तूफानी अन्दाज में बहने लगी। प्रवचनों की निराली रौनकें, सामायिकों की अद्भुत छटाएं तथा धर्म प्रशिक्षण के नए प्रयोगों ने जिनशासन को ऊंचे धरातल पर पहुंचा दिया।

पूज्य गुरुदेव जी म. की विनम्रता उनकी प्रभावनाओं से भी ज्यादा थी। वे अपनी प्रत्येक उपलब्धि को अपने आराध्य, इष्ट, भगवान्, वाचस्पति गुरुदेव श्री मदनलाल जी म. को समर्पित कर देते थे। जिन पावन चरणों की कृपा से धर्म के सबक सीखें हैं, उनके सामने सदा विनम्र भाव रखें। हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर मन वचन काया से उनका सत्कार करें।

आगम की इस शिक्षा को कहीं ढूंढना हो तो पूज्य गुरुदेव जी म. का प्रत्येक कार्य उदाहरण का काम करेगा।

यू.पी. से चलकर पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. हरियाणा में पधारे। छोटे-2 गाँवों को फरसा। ग्रामीण जनता के रहन-सहन से, बोलचाल से, सोच-विचार से परिचय किया और जैन समाज भी गुरुओं के दिव्य व्यक्तित्व से परिचित और प्रभावित हुए। वाचस्पति गुरुदेव जी ने सन् 1960 का अपना चातुर्मास स्थानक न होते हुए भी सोनीपत मण्डी को दिया तथा गुरुदेव जी म. को अपनी जन्म भूमि रोहतक का दायित्व दिया। चातुर्मास की लम्बी LIST में 1960 का वह चातुर्मास एक LAND MARK बन कर उभरा। जैनों के दिगम्बर श्वेताम्बर के भेद समाप्त हो गए। सनातन जैन सब एक हो गए। रोहतक के हर गली कूचे का रास्ता 'गुरु सुदर्शन दरबार' की ओर जाने लगा था। रोहतक के लाल ने अपनी माटी की लाली को शत सहस्त्र गुणा चमका दिया।

दहेज प्रथा उन्मूलन जैसा समाज सुधार का कार्यक्रम आन्दोलन का रूप ले गया। उसी चातुर्मास में रोहतक प्राकृतिक आपदा की चपेट में आ गया। ड्रेन न.8 में पानी OVER-FLOW हो गया और देखते-2 रोहतक के निचले इलाकों में FLOOD(बाढ़) आ गया। गुरुदेव जी म. शहर में पधार चुके थे जो ऊंचाई पर था। गुरुदेव श्री जी ने उस संकट काल में एक और भयंकर विभीषिका से रोहतक की रक्षा की। GOVERNMENT COLLEGE की SCIENCE LAB में रखी POTASSIUM CYNIDE की BOTTLE तक पानी आने का खतरा था। उस समय गुरुदेव जी म. ने उच्चाधिकारियों तक खबर भिजवाई और समय रहते महाभीषण जहर की BOTTLE को सुरक्षित निकाल लिया गया वर्ना कुछ भी अनर्थ हो सकता था। सारा रोहतक गुरुदेव के इस उपकार का ऋणी बना। चारों ओर की प्रशंसाओं से भी गुरु म. सा. का मानस प्रभावित नहीं हुआ। न अहम् आया, न महत्वाकांक्षा उभरी। तभी तो पूज्यपाद व्याख्यान वाचस्पति गुरुदेव श्री मदनलाल जी म. ने बाद में कहा था— "सुदर्शन! रोहतक में दो बाढ़ आई थीं, एक पानी

की, दूसरी दिवानी जनता की। तू दोनों से बचा रहा। न पानी का असर आया, न भीड़ का।" गुरुदेव जी म. का जीवन दर्शन सदा ही समभाव समता का रहा था।

**समो निंदा पसंसासु, तहा माणावमानयो**

निन्दा का माहौल हो या प्रशंसा का, सम्मान मिले या अपमान, गुरुदेव अविचल, तटस्थ बने रहे। संस्कृत भाषा की एक अन्योक्ति है–

**गंगामम्बु सितमम्बु यामुनम्, कज्जलाभमुभयत्र मज्जतः।**
**राजहंस तव सैब शुभ्रता, चीयते न च न चाप चीयते ॥**

हे राजहंस! तूने गंगा के श्वेत जल में डुबकी लगाई और यमुना के काले पानी में भी। पर तेरे सौन्दर्य में न कमी आई और न वृद्धि हुई। तू तो ज्यों का त्यों बना रहा।

पूज्य गुरुदेव जी म. को पता था कि मेरे गुरुदेव व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म. का अधिकतर विचरण पंजाब के उस इलाके में हुआ है जिसे दोआबा-माझा और मालवा कहा जाता है। जहां ओसवाल-भावड़ों का बाहुल्य है। यद्यपि कुछ भाग अब पाकिस्तान में चला गया है पर अब भी विशाल एरिया बाकी है। उस एरिया में विचरण का मजा तब है जब बड़ों की छत्रछाया में हो। इसलिए वाचस्पति गुरुदेव को पंजाब विचरण के लिए निवेदन किया। वे तो तैयार ही थे। यद्यपि उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं था, पर अपने सुयोग्य शिष्य को विस्तृत मंच देने के लिए उन्होंने अपने स्वास्थ्य को भी उपेक्षित कर दिया। उनकी भावना थी कि इनका चातुर्मास पंजाब के प्रमुख शहर जालंधर में करवाऊं। पर वहाँ के पदाधिकारी चाहते थे कि हमें व्याख्यान वाचस्पति गुरुदेव जी म. का ही मिले। इसलिए गुरुदेव श्री सुदर्शनलाल जी म. ने संभाला अमृतसर को। कई विवादों से घिरे अमृतसर संघ में जब अमृत की बौछार हुई तो संघ का सारा ढांचा तब्दील हो गया। पूज्य गुरुदेव केवल प्रवचनकार नहीं थे, वे आमूल चूल परिवर्तन करने वाले क्रांत द्रष्टा संत थे।

**हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए,**
**इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए,**
**आज यह दीवार पर्दों की तरह हिलने लगी,**
**शर्त लेकिन ये थी कि अब नींव हिलनी चाहिए।**

**सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,**
**मेरी नीयत है कि अब सूरत बदलनी चाहिए,**
**मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,**
**हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए ॥**

वाचस्पति गुरुदेव जालंधर में, तथा पूज्य गुरुदेव अमृतसर में रहकर भी परस्पर CONNECTED रहे और चातुर्मास के बाद तो मिल ही गए। उस वर्ष सबसे महत्वपूर्ण कार्य हुआ लुधियाना में आचार्य प्रवर श्री आत्मा राम जी म. के अंतिम पावन दर्शन। वाचस्पति गुरुदेव के अभिन्न सखा, पूज्य गुरुदेव के दीक्षा मंत्रदाता, आचार्य श्री आत्माराम जी म. का जीवन-सूर्य अपनी अंतिम आभा बिखेर रहा था। तब सारे संघ ने उस युग पुरुष की कृपा ली और पंजाब सहित सारे देश को संयमीय परम्पराओं से अवगत कराया।

विहार यात्रा के क्रम में पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शनलाल जी म. ने भारत के POPULAR HILL STATION शिमला की फरसना की, वे TOURIST बनकर नहीं, जिनशासन के धर्म कथी बनकर गए थे और वहां अपनी धर्मकथा का लोहा मनवाया। हर प्रकार की अनुकूलताओं के बावजूद उस वर्ष संघ में चिंता की काली घटाएं भी मण्डराने लगी थी। व्याख्यान वाचस्पति गुरुदेव श्री मदनलाल जी म. के गले में कैंसर जैसा असाध्य रोग प्रारम्भ हो गया। जिसने साल भर में उस महान् योद्धा को लील लिया। पंजाब के जण्डियाला गुरु कस्बे में वाचस्पति गुरुदेव पूर्ण समता के साथ अपनी अंतिम आराधना में लीन थे। उनके चरणों में पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शनलाल जी म. सहित 9 मुनिराज सेवा रत थे।

उस समय वाचस्पति गुरुदेव ने अपने संघ का भावी दायित्व गुरु

महाराज को सौंप दिया। 27 जून 1963 के दिन वह महान् आत्मा विदा हो गई, तो गुरुदेव श्री सुदर्शनलाल जी म. ने अपने मनोबल को सुरक्षित रखते हुए सहवर्ती बड़े-छोटे सब मुनियों को संभाला। गुरुदेव श्री व्याख्यान वाचस्पति जी म. ने गुरुदेव जी म. को एक इशारा भी किया था कि अब कुछ वर्ष हरियाणा की भूमि को सिंचित करो, वहाँ कुछ भव्य आत्माएं कल्याण मार्ग पर बढ़ने के लिए अन्दर ही अन्दर तैयार हो रही हैं।

अतः 1964 में पूज्य गुरुदेव जी म. ने हरियाणा संभाग को उद्योतित प्रभावित किया। जींद में विराजमान योगीराज श्री रामजीलाल म. को संघ का दायित्व सुपुर्द कर दिया और 1967 तक उनकी आज्ञा के तहत संयम आराधना करने लगे। गुरुदेव जी म. के गहन सिंचन से हरियाणा के LANDSCAPE (प्राकृतिक दृश्य) में जहां धार्मिक हरियाली लहलहाई, वहीं गुरुदेव जी म. की गोद में कुछ बालकों ने शरण ग्रहण की। गुरु म. ने अपनी धर्म प्रभावना को आडम्बर रहित रखा। केवल सामायिक, पौषध, दया, आयम्बिल स्वाध्याय जैसे निर्दोष विधि विधानों के बलबूते पर समाजों में करंट भरा। उनके धर्म अभियान की विशेषता थी— न खर्चा, न पर्चा, न चर्चा। चातुर्मास काल हो या शेष काल गुरुदेव जी म. की तरफ से एक POST-CARD का भी खर्चा समाज पर नहीं होता था। वे इश्तिहार, पत्रिका, विज्ञापन, HOARDING, BANNER, स्वागतद्वार जैसे प्रदर्शन की दौड़ में कभी नहीं आए।

किसी संघ या साधु-साध्वी के व्यक्तिगत जीवन की चर्चा से बचते रहे। न चर्चा करनी, न चर्चा सुननी। वो कहते थे—

**तू अपनी संभाल तैनूं और नाल की?**
**तू गठरी संभाल तैनूं चोर नाल की?**

केवल अपने को देखने और संभालने वाले उस महान् साधक का जीवन ही ऐसा था कि हजारों लोग स्वयं संभल जाते थे। क्या संत क्या श्रावक खुद ही कह देते कि श्री सुदर्शनलाल जी म. विचर रहे हैं संभल कर चलो।

घरों के कलह मिट गए, समाजों के संघर्ष रुक गए। युवकों के कदम व्यसनों, ऐबों से दूर हो गए, बालकों में सामायिकों की होड़ लगने लगी। बहनों ने तपस्या और सेवा का सहारा लिया। दिगम्बर-श्वेताम्बर की दूरियां गुरुदेव श्री सुदर्शनलाल जी म. की सर्वव्यापी दृष्टि से विलीन हो गई। सनातन, आर्य समाज को उनमें सच्चा महात्मा नजर आया। गरीबों को सहारा, अमीरों को मार्गदर्शक मिला। उस समता पुरुष के लिए ग्रामीण-शहरी, शिक्षित-अशिक्षित, संपन्न-विपन्न, बालक-बुजुर्ग का अंतर ही नहीं रहा। वे सबके थे, सब उनके थे।

**वन्दे वारिद सार्व भौम भवतो विश्वोपकारि व्रतम् ॥**

हे महामेघ, तूने सारी धरा को अपने मधुर शीतल जल से तृप्त कर दिया, सारी धरा तुझे नमन करती है।

योगिराज श्री रामजीलाल जी म. के देवलोक-गमन के बाद 1968 में सब मुनियों ने गुरुदेव को विधिवत् **'संघशास्ता'** के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। गुरुदेव श्री सुदर्शनलाल जी म. ने उस पद को प्रतिष्ठा का आधार नहीं बनाया, अपितु संघ के प्रति अधिकाधिक दायित्व निभाने का निमित्त समझा। उन्होंने उस अवसर पर एक सपना संजोया कि जैसे चारित्र चूड़ामणि श्री मयाराम जी म., श्री छोटेलाल जी म., श्री नाथूलाल जी म. व व्याख्यान वाचस्पति गुरुदेव श्री मदन लाल जी म. उत्तर भारत की सरहदों को पार कर राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश तक विचरे। ऐसे ही मैं भी उन अपरिचित क्षेत्रों का अवगाहन करूं।

इस दृष्टि से उन्होंने जयपुर, अलवर, भरतपुर, सवाई माधोपुर जैसे कुछ राजस्थानी क्षेत्रों में अपने संयम-तप साधना एवं प्रवचनों की धूम मचाई। दीर्घकालीन विचरण की योजना को उन्होनें तत्कालीन परिस्थितियों की वजह से छोड़ दिया और वापस अपनी PITCH पर आ गए। 1970 के दिल्ली चातुर्मास ने हिलती धर्मश्रद्धाओं को बचाया। ये वो समय था जब शास्त्रों को चुनौती दी जा रही थी। मुनियों के अनिवार्य नियम-लोच, पैदल विहार पर सवाल खड़े किए जा रहे थे, नए विचारों के नाम पर

शिथिलाचार को परोसा जा रहा था। पूज्य गुरुदेव अपने असूलों के पक्के थे। लोक प्रवाह में बहने की आदत नहीं थी। बिना किसी टीका टिप्पणी में पड़े वे जिनशासन की प्रभावना में लगे रहते थे।

**मुझे अपने पथ पे है स्वयं को बढ़ाना,**
**गाते हुए जिन्दगी का तराना ॥**

1970 के अंत में पूज्य गुरुदेव एवं श्रमण संघ के आचार्य सम्राट् श्री आनन्द ऋषि जी म. का ऐतिहासिक मिलन हुआ जिसके बाद दोनों महापुरुष एक दूसरे को करीब से समझने लगे।

पूज्य गुरुदेव जी म. का पुण्यातिशय बढ़ता गया। दिल्ली, यू.पी., हरियाणा, पंजाब, हिमाचल, चण्डीगढ़ (UT) के स्थानकवासी परिवारों के लिए एक मात्र शरण गुरुदेव के चरण ही थे। किसी को घरेलू समस्या ने घेरा हो उसने गुरुदेव से समाधान पाया। कोई आर्थिक संकट, शारीरिक रोग, मानसिक विक्षोभ का शिकार हुआ तो अंतिम शरण गुरुदेव श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. के चरणों में पहुँचा।

अपनी समाज के युवकों को भटकावों से बचाने के लिए गुरु महाराज ने लम्बें-2 विहार कर जन जागृति का शंखनाद किया। बालकों में संस्कार डाले। युवकों को ऐबों से बचाया। बुजुर्गों को अशांति से मुक्त किया। बहनों को सम्मान से जीना सिखाया।

किसी भव्य भाग्यशाली आत्मा में वैराग्य का अंकुर जन्मता था तो वह गुरुदेव की गोद में आकर ही पल्लवित-पुष्पित होता था। स्वयं गुरुदेव भी अनेक जीवों की मनोभूमि में वैराग्य के बीज डालते रहते थे। दीक्षाओं के कार्यक्रम भी गुरुदेव की बढ़ती प्रभावना का प्रमाण बनते गए।

धर्म प्रभावना और लोक श्रद्धा का ये आलम था कि सन् 1972 में ही जींद चातुर्मास में दिल्ली चाँदनी चौंक से सात बसों का काफिला गुरुदेव के दर्शन करने आया था। उस दर्शन यात्रा का संयोजन भी एक मूर्ति पूजक भाई मणिलाल डोसी की ओर से हुआ था। गुरुदेव जी म. के लिए सभी संप्रदाय समान रूप से भक्ति रखती थी।

पूज्य गुरुदेव स्वयं तो इस भागीरथ कार्य का संपादन कर ही रहे थे। उनका कदम-2 पर साथ देने वाले थे घोर तपस्वी श्री बद्रीप्रसाद जी म., भगवन् श्री रामप्रसाद जी म.। गुरु म. उन पर फिदा थे तो वे गुरुदेव पर कुर्बान।

**सारी धरा भी साथ दे तो और बात है,**
**पर तू जरा भी साथ दे तो और बात है।**
**चलने को एक पैर से भी चलता है आदमी,**
**पर दूसरा भी साथ दे तो और बात है ॥**

पूज्य गुरुदेव को संत और श्रावक व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म. का ही नूतन अवतार मानते थे। 1963 के बाद 1973 तक के सफर में पूज्य गुरुदेव जी म. ने जो MILE STONE स्थापित किए थे उन्हें रेखांकित करते हुए गुरुवर्य श्री रामप्रसाद जी म. ने कुछ रूबाइयां लिखी थीं। उनमें से दो आपके सामने पेश हैं–

**मदन गुरुवर तू था कुदरत का कमाल,**
**जिन्दगी तेरी थी ऐसी एक मिशाल।**
**ढूंढते हैं पर कहीं मिली नहीं,**
**ढूंढते हो गए दस हमको साल ॥**

**रूह तेरी फिर दिखाई दी हमें, गूंज तेरी फिर सुनाई दी हमें,**
**तेरे जैसी ही सुदर्शन जी ने जब, जगमगाती रहनुमाई दी हमें ॥**

1975 भगवान् महावीर का 2500वां निर्वाण वर्ष था। उस साल जलूस-रथ यात्राएं धर्मचक्र अभियान के कई प्रारूप जैन समाज में चालू हुए थे, लेकिन गुरु म. ने विशुद्ध धर्म ध्यान के द्वारा ही भगवान् को अपनी श्रद्धा का अर्घ्य समर्पित किया था।

लुधियाना प्रवास के दरमियान गुरुदेव जी म. ने एक साथ 2500 सामायिक करवाई थीं।

1976 में पहली बार जम्मू क्षेत्र को फरसा और नूतन संरचना की। वह वर्ष शांति स्थापना के लिहाज से भी महत्वपूर्ण रहा। पंजाब की कई

ब्रादरियां विभाजन का दंश झेल रही थी। ग्रुपिज्म(GROUPISM) ने आपसी भाई चारे को तोड़कर कोर्ट कचहरियों के दरवाजे खटाखटा दिए थे। उस समय पूज्य गुरुदेव शांति के देवता बनकर पंजाब में विचरे। जण्डियाला में गुरुदेव जी ने अपनी उपस्थिति में तथा फरीदकोट में अपने महान् योग्य शिष्य शास्त्री श्री पदम्चन्द जी म.सा. के माध्यम से सामाजिक टकराव दूर किए और संघों में एकता बनाई। उनका दृष्टिकोण था—

**है प्रेम शांति की पगडण्डी, जिसने इसको अपनाया है,**
**उसका ही जीवन शांत बना, उसने ही सब कुछ पाया है।**

उस वर्ष जालंधर चातुर्मास में पूज्य गुरुदेव जी म.सा. के सान्निध्य में 108 अठाइयों की आराधना हुई तो सारा उत्तर भारत चमत्कृत हो गया था।

पूज्य गुरुदेव तपस्या को लेकर बड़ा संतुलित दृष्टिकोण रखते थे। वे किसी को लम्बी तपस्या के लिए दबाव नहीं डालते थे। जिसका सामर्थ्य हो उसे प्रोत्साहित कर देते थे। तपस्याओं के RECORD बनाना उनकी NATURE में नहीं था। हाँ, तपस्या करने वालों को पूरा सम्मान देते थे। संयम मूलक तप के हिमायती थे। यही दृष्टि उनके अन्य मुनियों में भी कायम है। अपने मुनियों में वे ज्ञानाराधना और संयम पालना का भाव भरते रहते थे। स्वयं विनय और सेवा के प्रतिमान थे, तो मुनि भी उनके ही सांचे में ढलने लगे थे। जैसे-2 मुनि संघ में वृद्धि होने लगी, वैसे-2 वे संघों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए चातुर्मासों की संख्या भी बढ़ाने लगे। पंजाब-हिमाचल-जम्मू को तीन वर्ष तक सींचकर पुनः हरियाणा में लौटे तो एक कष्ट साथ ले लिया जो जीवन भर उनका साथ निभाता रहा। वो था 'घुटनों का दर्द'। शाहबाद मारकण्डा में किसी के नवनिर्मित मकान में ठहर गए थे और पैर फिसल गया, उस चोट ने जो नुकसान किया वह नुकसान 22 वर्ष तक ठीक ही नहीं हुआ और जीवन पर्यन्त पीछा करता रहा। अपने घुटने की पीड़ा के प्रति उनका अंदाजे बयां भी क्या गजब का था। कहते थे— "ये मेरा पुराना साथी है इसे प्यार से

सहलाता रहता हूँ, निभाता रहता हूँ।"

**मुसीबत हो कि राहत हो, नहीं लाजिम गिला करना,**
**बशर का फर्ज है हर हाल में, शुक्रे-खुदा करना।**

पूज्य गुरुदेव जी म. ने त्यागी परिवारों को प्रतिष्ठापित करने के लिए एक नई व्यवस्था बनाई। संघ में होने वाले दीक्षा समारोहों पर पूर्व के दीक्षित मुनियों के परिवार के वरिष्ठ व्यक्ति को सभा का अध्यक्ष बनाया जाए। राजनेताओं, उद्योगपतिओं, धनाढ्यों, शिक्षाविदों की तुलना में त्यागी परिवार सम्मान का अधिक अधिकारी है।

गुरुदेव का संकल्प था– हर क्षेत्र को, हर घर को फरशना, हर व्यक्ति को धर्म भावना से भरना। पर उन्होंने किसी क्षेत्र पर, घर पर या श्रावक पर अधिकार नहीं जताया। ये अलग बात है कि सबने उनको अपना माना। ये सोच गुरु महाराज ने दी और जनता तक पहुँचाई।

पूज्य गुरुदेव केवल धर्म के उपदेष्टा मात्र नहीं थे, वे अध्यात्म के गहन सागर के गोताखोर भी थे। उनकी दृष्टि आत्मकल्याण के प्रति सदैव जागरुक रहती थी। निरतिचार आचार के आराधक पूज्य गुरुदेव का एक प्रसंग इतिहास का स्वर्ण पृष्ठ बनकर जगमगा रहा है। 56 साल की आयु, 37 साल की दीक्षा, प्रसिद्धि का शिखर, शिष्यों की बढ़ती संख्या, समाज के एक मात्र मसीहा जैसी हैसियत फिर भी 1979 में उन्होंने तपस्वी श्री रोशनलाल जी म. सा. के समक्ष दिल्ली त्रिनगर में अपनी आत्म आलोचना की। ऐसी निश्छल, सरल, ऋजु आलोचना को आगमकारों ने भाव संथारा कहा है। कल्पना करें– एक तरफ वे आत्माएं हैं जो मरते-2 भी आलोचना नहीं कर पाते, दूसरी तरफ गुरुदेव जी.म. ने अपने स्वर्गवास से 20 वर्ष पूर्व ही शुद्धतम आलोचना कर ली थी।

गुरुदेव जी म. को हरियाणा, पंजाब, दिल्ली तथा यू.पी. इन चार राज्यों ने अपने होनहार लाल समर्पित किए। गुरुदेव उन्हें तराशते रहे और संघों की सेवा में सौंपते रहे। वे अपने लिए कुछ नहीं रखते थे। वे इतने भरपूर थे कि भीतर में पाने की इच्छा ही नहीं रही थी। वे ऐसे

मेघ थे जो अपने जल को धरती के लिए अर्पित कर देता है। अपने पास एक-बूंद भी नहीं रखता। उनका पल-2 दो कार्यों में व्यतीत होता था— अन्तर्निरीक्षण करना और समाज को जागृत करना और उनमें एक भी पहलू मंद नहीं पड़ा।

**जहा अंतो तहा बाहिं जहा बाहिं तहा अंतो।**

जैसे वे अन्दर को संभालते थे, उसी तरह बाहर को भी संभालते थे। जैसे बाहर को संभालते थे, उसी तरह अन्दर को भी संभालते थे। द्रव्य और भाव, निश्चय और व्यवहार, उन्होंने एक भी पक्ष को उपेक्षित नहीं किया। उन्होंने सबका सम्मान किया पर अध्यात्म गौरव को कम नहीं होने दिया। वे अक्सर कहते थे, "मैं इज्जत एक बालक की भी करूंगा पर खुशामद खुदा की भी नहीं करूंगा।" वे कभी धनपतियों के इशारों पर नहीं चले। वे कहते थे— न मुझे चंदा चाहिए, न पत्रिकाएं छपवानी, न संस्थाएं बनानी। मैं क्यों सेठों की खुशामद करूं। अपना संयम ठीक रहेगा तो हमें सर्वत्र सम्मान मिलेगा। संयम नहीं रहा तो हमें कोई पूछेगा नहीं। उनका हर कदम नपा तुला और मर्यादापूर्ण होता था। समाज का विकास हो ये उनका ध्येय रहा। विकसित और जागृत समाज आगे क्या निर्णय ले, इस विषय में हस्तक्षेप नहीं करते थे। गुरुदेव के प्रवचनों के फल स्वरूप जैन समाज का युवा वर्ग स्थानकों में आने लगा। जैनेतर लोग आने लगे, स्थानकें छोटी पड़ने लगी। अतः संघ प्रमुखों ने विशाल स्थानकों का निर्माण करवाया। जगह-2 स्थानक क्रान्ति का आगाज हुआ। परन्तु गुरु म.ने न नाम अंकित होने दिया, न श्रेय लिया, न दानादि कार्यों में दखल दिया। सोनीपत, गोहाना, बड़ौत, आदि की दीक्षाओं पर RECORD BREAKING भीड़ों ने गुरुदेव जी म. का प्रसिद्धि GRAPH तो बढ़ाया, पर उन्होंने अपना गर्व नहीं बढ़ने दिया। गुरुदेव की शिष्य संपदा बढ़ी तो प्रभावना के क्षेत्र भी बढ़े। पूज्यपाद गणाधीश श्री प्रकाशचन्द्र जी म. सा. ठाणे तीन ने प्रभावना का दायरा राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मुम्बई और मध्यप्रदेश तक फैलाया। संघ नायक पूज्य शास्त्री श्री पद्मचन्द्र जी म. ने पंजाब के चप्पे-2 पर, विशेषतः लुधियाना

की नई GENERATION के दिलों में गुरु सुदर्शन का नाम गूंजा दिया। गुरुदेव जी म. का निजी विचरण पैर दर्द के कारण सीमित होने लगा था। पर उनका हर जन हर मन पर आधिपत्य गहन से गहनतर होता गया। मुनियों को विस्तार का भार देते गए। स्वयं को मुनियों की चर्या के प्रति समर्पित करते गए। मुनियों के श्रद्धेय गुरुदेव थे तो साध्वियों के भी आराध्य थे। विशेषतः श्री शांति जी म., श्री भागवन्ती जी म. का शिष्या वर्ग गुरुदेव के प्रति असीम आस्था रखता रहा। बढ़ती हुई श्रोताओं की भीड़ों के कारण कुछ चुनौतियां भी उभरी। सबसे बड़ी चुनौती थी LOUD SPEAKER की मांग। पूज्य गुरुदेव इसे बड़ी आसानी से टालते गए। किसी ने पूछ लिया, जब आप की उम्र भी ढल जाएगी आवाज कम हो जाएगी तो PUBLIC को कैसे जिनवाणी सुनाओगे। तब गुरुदेव ने हँसकर कहा– फिर मैं अपने आप को सुनाऊंगा। गुरुदेव सबकी सुनते थे। पर निर्णय अपनी बुद्धि से लेते थे। उनमें सुनने का अद्‌भुत गुण था। सुख दुःख की तो सुन ही लेते थे। अपने संतो की सुनते थे, विरोधियों की भी सुनते थे। पर सुनकर गंभीर रहते, फिसलते नहीं थे।

**सबकी बात न माना कर, खुद को भी पहचाना कर,**
**दुनिया में जीना है तो, कुछ अमृत पीना है तो,**
**अपनी और निशाना कर, ...**

**दुनिया जल है मरुथल भी, उपवन है तो जंगल भी,**
**माना बहुत स्यानी है थोड़ी-2 पागल भी,**
**इसकी बात जो मानेगा, खुद को क्या पहचानेगा,**
**चल खुद को झकझोर कुंवर, लौट आ अपनी ओर कुंवर,**
**कब तक यों ही भटकेगा, अपना ठौर ठिकाना कर,**
**सबकी बात न मानाकर ॥**

पूज्य गुरुदेव का अधिक विचरण हरियाणा और यू.पी. के बीच होने लगा था। दिल्ली और पंजाब को दूर से ही तृप्त कर रहे थे। कारण स्वास्थ्य भी था। वर्षीतप की तपस्याओं की संख्या भी बढ़ती जा रही थी।

दीक्षाएं, आखा तीज, चातुर्मास हर समय स्थानीय और बाहरी दर्शनार्थी मेले की तरह उनके इर्द-गिर्द मण्डराने लगे थे। उनकी एक झलक मिल जाए, वे मुस्कराकर देख लें, एक शब्द का आशीर्वाद दे दें इसमें ही सभी लोगों को तृप्ति मिल जाती थी। 1987 में गुरुदेव के जीवन में, उनके संघ में या यों कहिए सारे जैन समाज में एक क्रांति घटित हुई। जब तपस्वी श्री बद्रीप्रसाद जी म. ने 5 अगस्त को सोनीपत में संथारा ग्रहण किया और 72 दिन चला और 16 अक्तूबर 1987 को पूरा हुआ। गुरुदेव जी म. के लिए उनका संथारा तन मन को भिगोने वाला साबित हुआ, उस घटना के बाद उनका हर श्वासोच्छवास संथारे से भावित हो गया।

1992 में गुरुदेव जी म. ने दिल्ली को धन्य किया, छः माह के विचरण काल में उन्होंने समग्र दिल्ली का गहन अवगाहन कर डाला, क्या पश्चिमी दिल्ली, क्या दक्षिणी दिल्ली, क्या यमुनापार, क्या केन्द्रीय दिल्ली, क्या उत्तरी दिल्ली। गुरुदेव ने धर्मक्रांति को अद्‌भुत आयाम प्रदान कर दिया। अगले वर्ष भी दिल्ली ही कृतार्थ हुई। 1994 का साल यू.पी. के नाम लिखा गया। उनकी जीवन धारा बिना किसी विरोध के चलती रही। वे शिथिलाचार को टालते रहे तो कठोरता के नाम पर आने वाली सांप्रदायिकता को भी नकारते रहे। अपनी सधी हुई साधना से उन्होंने लोक श्रद्धाओं को सुरक्षित रखा तो असांप्रदायिक दृष्टि देकर सामाजिक तोड़फोड़ को रोके रखा। वे समस्या का समाधान देते थे। केवल आलोचना करके नहीं रह जाते थे। वे आलोचना सुन सकते थे, कर नहीं सकते थे। आत्मसुधार की ऐसी ललक विरले ही लोगों में होती है। वे अक्सर कहते थे हमने संयम लिया है, घर-बार छोड़ा है, माता-पिता को रुलाया है। वह केवल लोगों की रोटी खाने के लिए नहीं बल्कि आत्मा के कल्याण के लिए किया है। गुरुदेव की इस दहाड़ के आगे शिथिलाचारी ताकतें दहल जाती थीं।

पूज्य गुरुदेव जी म. ने दो साल पंजाब को सुपुर्द किए। 1995 का सुन्दर नगर (लुधियाना) का चातुर्मास 'न भूतो न भविष्यति' प्रमाणित हुआ। जैन युवकों के जत्थे श्री राकेश जैन के नेतृत्व में गुरुदेव के पंजाब

विचरण को शाहाना बनाते रहे, पर इस अध्यात्म योगी की पदयात्रा में अचानक व्यवधान आ गया। रायकोट से चलकर पंजाब के दूरवर्ती क्षेत्रों को पावन करना था लेकिन घुटनों ने जवाब दे दिया। अंततः गुरुदेव को भी इन घुटनों के आगे घुटने टेकने पड़ गए। 3½ महीने के REST के बाद उन्हें डोली (पालकी) का प्रयोग करना पड़ा जो उनके लिए दर्द भरी घटना थी। 1996 सुनाम चातुर्मास में तपस्या की बरसात के आगे मानसूनी बरसात भी हार मान गई।

गुरुदेव अन्तर्मुखी होते-चले गए। स्वाध्याय, ध्यान, चिंतन, आत्म रमण में उनका अधिकाधिक समय गुजरता था। आहार और निद्रा तो उनकी अल्पतम थी ही। अब वार्तालाप भी अल्प हो गया था।

1997 का अधिकांश काल जींद के नाम रहा। स्वास्थ्य और समाधि दोनों को ध्यान में रखते हुए गुरुदेव जी म. निवृत्ति की ओर प्रस्थित होते गए। चातुर्मास के बाद हल्का-सा विचरण हुआ, वह भी डोली के सहारे। जो उनकी रुचि के प्रतिकूल था, मजबूरी थी इसलिए डोली को अपनाया। उन संतों का सौभाग्य था जो गुरुसेवा का दुर्लभ अवसर उन्हें मिला। अम्बाला शहर को अपना चातुर्मास प्रदान करना था। रास्ते में लगभग हर पड़ाव पर चमड़ा मुक्ति की अलख जगाते रहे। गैर शाकाहारी होटलों के बहिष्कार, रात्रि विवाहों का प्रत्याख्यान, नेत्रदान आदि न जाने कितने समाज उत्थान के प्रकल्प गुरुदेव जी म. ने प्रारम्भ किए।

अंबाला का वह दीर्घ प्रवास और चातुर्मास हर लिहाज से अद्‌भुत और अनुपम रहा। वर्षीतप पारणे हुए, नए प्रारम्भ हुए। पर्यूषणों में एक साथ दो सौ अठाइयों के पच्चक्खाण हुए। प्रशिक्षण और धर्म की CLASSES चलीं।

स्वयं पूज्य गुरुदेव जी म. ने आगमों का श्रवण और पारायण किया। अब वे आत्मलोक के यात्री बन चुके थे। आहार में आने वाले द्रव्यों की संख्या इतनी अल्प हो गई कि कभी-2 तो निराहार अवस्था हो जाती या ऊनोदरी। मिठाई, नमकीन, तले हुए पदार्थ तो उन्होंने युवावस्था से ही नहीं लिए, अब तो कहाँ लेते। अब तो साधारण रोटी सब्जी भी उन्हें

अनावश्यक लगने लगी थी। द्रव्य भाव संलेखना का दौर चल रहा था।

वहां से पटियाला समाना होकर कैथल आए ही थे कि कृपानाथ श्री शांतिचन्द्र जी म. को HEART की PROBLEM खड़ी हो गई। उनका स्थायी उपचार करवाने के उद्देश्य से दिल्ली की ओर प्रस्थित हो गए। यद्यपि उनकी अपनी सेहत दिल्ली के अनुकूल नहीं थी। पर सबकी पीड़ा हरने वाले उस मसीहा को अपने विनीततम शिष्य की पीड़ा भी तो मिटानी थी। मार्ग में घरौंडा मण्डी में पूज्य गुरुदेव ने बीते वर्षों की आलोचना कर जीवन दर्पण को स्वच्छ किया। श्री शांतिचन्द्र जी म. को दिल्ली पहुंचने में काफी समय चाहिए था। इसलिए गुरुदेव जी म. ने 18 अप्रैल 'अक्षय तृतीया' शालीमार बाग में मनाकर कुछ तकलीफों की TESTING के लिए **'सर गंगा राम HOSPITAL'** की तरफ पदार्पण किया। 24 अप्रैल को कुछ शारीरिक बेचैनी बढ़ी तो 25 अप्रैल को 2-3 बजे HOSPITAL में ADMIT हो गए और सायं 6 बजे तो शांतभाव से विदा भी हो गए।

सारे संसार में अन्धकार सा छा गया। 26 अप्रैल 1999 को लाख के करीब श्रद्धालुओं ने उनके शरीर को निगम बोध घाट पर श्रद्धासुमन अर्पित किये। उनकी संघीय एवं व्यक्तिगत भावनाओं का सम्मान करते हुए संघ के प्रमुखों ने आकाश से पुष्प वर्षा की योजना छोड़ दी। शरीर पर रुपए सिक्के उछालने की परम्परा बन्द कर दी। गुरुदेव का चित्र वितरित नहीं किया और सबसे कठिन निर्णय भी लिया कि गुरुदेव की स्मृति में समाधि का निर्माण नहीं किया जाएगा क्योंकि यह स्थानकवासी संप्रदाय की मूल मान्यता के विरुद्ध है।

तब से लेकर आज तक पूज्य गुरुदेव जी म. सा. हर भक्त के हृदय में बस गए हैं। वे अजर हैं, अमर हैं। उनकी संयमी मुनि मण्डली उसी परम्परा को आगे बढ़ा रही है। 16 साल तक संघ नायक 'शास्त्री' श्री पद्मचन्द जी म. सा. ने संघ व्यवस्था को संभाला और अब पाँच साल से संघ संचालक श्री नरेश मुनि जी म. सा. अपने वरिष्ठ ज्येष्ठ गुरु भ्राता गणाधीश श्री प्रकाशचन्द जी म. एवं संघाधार श्री विनयचन्द्र जी म. आदि

की छत्र छाया में संघ का नेतृत्व संभाल रहे हैं। सभी मुनिराज और सभी साध्वियां जी म. अपने नियमों में जागरूक होकर आगे बढ़ रहे हैं।

गुरुदेव के पश्चात् भी अनेक शुभ कार्य 'गुरु सुदर्शन संघ' में हुए हैं।

1. स्थविरा महासाध्वी श्री सुन्दरी जी म. का साध्वी समुदाय, संथारा साधिका महासाध्वी श्री शांति देवी जी म., श्री भागवन्ती देवी जी म. की नेश्राय में 'गुरु सुदर्शन संघ प्रमुख' से आज्ञा प्राप्त 'सुन्दरी शांति साध्वी संघ' बना, जिसकी प्रमुखा महासाध्वी श्री संयम प्रभा 'कमल' जी हैं।
2. चातुर्मासों से वंचित क्षेत्रों में त्याग शिरोमणी श्री राजेन्द्र मुनि जी म. की देख-रेख में स्वाध्यायी जाकर पयूर्षण पर्वाराधना करवाते हैं जिनकी संख्या सैंकड़ों में है।
3. श्री रविन्द्र जी जैन (बुटाणा वालों) के माध्यम से ग्रीष्म कालीन अवकाश में बालकों के लिए धार्मिक संस्कार शिविरों का आयोजन होता है जिसमें हजारों बच्चे लाभ लेते हैं।

गुरु सुदर्शन संघ का नारा है– **"संयम सेवा स्वाध्याय विनय–गुरु सुदर्शन संघ की जय"**

हम श्रावक श्राविकाओं को भी पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शनलाल जी म. सा. द्वारा स्थापित आदर्शों को अपने जीवन में उतारना है। उनका यह शताब्दी वर्ष हमारे लिए, हमारी भावी पीढ़ियों के लिए, समस्त समाज के लिए, कुल मानवता के लिए प्रकाश स्तंभ बनेगा। ऐसी हमारी भावना और आशा है। वर्ष भर धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन अपने क्षेत्रों में करते रहें।

इन्हीं भावनाओं के साथ आओ! उनके जयकारों से अपने को धन्य बनाएँ।

"जय जिनेन्द्र"

# गुरु-सुदर्शन-संघ-स्तुति

(तर्ज़ः— हम भूल गए रे हर बात)

गुरुदेव सुदर्शन लाल, तुम्हारा संघ सुदर्शन है।
चलता संयम की चाल, तुम्हारा संघ सुदर्शन है ॥

1. ये असली चंदन की माला, और प्रेम का धागा है डाला,
मुनियों की माला के मेरू, तू ही सौरभ भरने वाला।
हम हुए हैं मालामाल, तुम्हारा संघ सुदर्शन है ॥

2. यह माला वर देने वाली, अभिमंत्रित कर देने वाली,
तुमने इस पर है जाप किया, इसमें आत्मिक शक्ति डाली।
सब संकट देती टाल, तुम्हारा संघ सुदर्शन है ॥

3. ब्रह्मा बन रचने वाले हो, विष्णु हो तुम रखवाले हो।
इस माला के शिव शंकर हो, दोषों को हरने वाले हो,
की है करनी है संभाल, तुम्हारा संघ सुदर्शन है ॥

4. नकली मोती का काम नहीं, इन मुनियों का कोई दाम नहीं, (इन सतियों..)
भावों की बहुत ऊंचाई है, गा सकते हम गुणग्राम नहीं।
झुकता सबका ही भाल, तुम्हारा संघ सुदर्शन है ॥

5. नवपद के अन्तिम चारों पद, देकर के दिया है पंचम पद,
पद देकर ध्यान रखा तुमने, नहीं आने पाए मन में मद।
पंचम गुण स्थान निहाल, (चारों ही संघ निहाल) ॥

तुम्हारा संघ सुदर्शन है ॥

# 'गुरुदेव की गरिमा'

"जितनी शीघ्रता से सुदर्शन जी की पुण्याई उदय में आई है, उतनी जल्दी अन्यत्र कहीं दृष्टिगोचर नहीं होती।"

*–व्याख्यान वाचस्पति गुरुदेव श्री मदनलाल जी म.*

"सुदर्शन मुनि का चित्त इतना निर्मल एवम् निश्छल है, जो न किसी का बुरा सोच सकता है और न बुरा कर सकता है।"

*–बाबा श्री जग्गूमल जी म.*

"सुदर्शन मुनि के क्या कहने,
ये तो एक दिन आचार्य भी बन सकता है।"

*–तपस्वी श्री फकीरचन्द जी म.*

"सुष्ठु दर्शनं यस्य सः सुदर्शनः"
अथात् जिनके दर्शन मंगलकारी हैं,
ऐसे श्री सुदर्शन मुनि हैं।

*–आ. श्री आनन्द ऋषि जी म.*

"औरों के दीए तो घी और तेल से जलते हैं, पर श्री सुदर्शनलाल जी म. तो इतने पुण्यवान हैं कि इनके दीए तो पानी से भी जल जाते हैं।"

*–घोर तपस्वी श्री बद्रीप्रसाद जी म.*

"भारत-भर के सारे जैन आचार्यों को एक पलड़े में रख लें और दूसरे पलड़े में श्री सुदर्शनलाल जी म. को रखें, तो भी इनका पलड़ा ही भारी रहेगा।"

*–भ. श्री रामप्रसाद जी म.*